गलातियों
(GALATIANS)

गलातियों

१ **पौलुस,** यीशु मसीह का प्रेरित जिन्हें परमेश्वर पिता ने मरे हुओं में से जिलाया था, परमेश्वर पिता के व्दारा भेजा गया
२ है, मनुष्यों व्दारा नहीं । **यह** पत्र गलातिया के उन सभी मण्डलियों के लिए उन भाइयों की ओर से भी है जो मेरे साथ
३,४ हैं । **हमारे** स्वर्गिक पिता और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें शान्ति प्राप्त हो । **जिन्होंने** हमारे पिता की इच्छा के आधार
५ पर हमारे अपराधों के लिए अपने आप को दिया ताकि हमें इस बुरे संसार से छुड़ा लें । **उन्हीं** को प्रशंसा, सम्मान और
६ स्तुति सदा मिलती रहे । ऐसा ही हो । **मुझे** आश्चर्य यह है कि इतनी जल्दी तुम यीशु मसीह, जिन्होंने अपनी बड़ी कृपा
७ से तुम्हें बुलाया था, उनसे मुड़कर एक भिन्न प्रकार की विचारधारा से प्रभावित हो रहे हो। **वह** एक शुभसंदेश नहीं है।
८ लेकिन कुछ लोग तुम्हें तकलीफ दे रहे हैं, और मसीह के शुभसंदेश को भ्रष्ट कर रहे हैं। **यदि** हम या स्वर्ग से कोई दूत

१:१ ***"प्रेरित"***-मत्ती १०:२; रोमि १:१ ।

"मरे हुओं में से"-मत्ती २८:६ । ध्यान दें कि पौलुस किस तरह से स्वर्गिक पिता परमेश्वर और यीशु को अलग-अलग दिखाता है । वे दोनों ईश्वरत्व में हैं लेकिन दो अलग व्यक्ति भी हैं। मत्ती ३:१६,१७; यूहन्ना १७:१; आदि ।

१:२ तुर्किस्तान में गलातिया एक बड़ा क्षेत्र था । इकुनियुम, लुस्त्रा और दिरबे (प्रेरित १४:१-२०) इसी राज्य में थे ।

१:३ रोमि १:७ ***"असीम कृपा"*** इस चिट्ठी में मुख्य शब्द हैं -१:३,६,१५, २:६,२१,३:१८,५:४; ६:१८ पौलुस साफ-साफ दिखाता है कि कृपा के शुभ संदेश का मतलब क्या है ।

१:४ ***"हमारे पापों के लिये"***-यशा ५३:६,८,१०; मत्ती २६:२८, यूहन्ना १:२६, रोमि ३:२४,२५; १ कुरि १५:३; २ कुरि ५:२१; इब्रा ६:२८; १ पत २:२४; ३:१८ ।

"छुड़ा ले" यहाँ यीशु की मौत का एक खास कारण है । यह परमेश्वर का चुना हुआ तरीका था, ताकि दुनिया की दुष्टता और उन जंजीरों से लोगों को मुक्त करे जिसमें वे बन्धे हुए हैं । यीशु को रोमियों ११:२६ । में ***"छुड़ानेवाला"*** कहा गया है । मत्ती १:२१; लूका ४:१८; कुलु १:१३, तीतुस १:२४ इब्रा २:१५ से मिलान कीजिए । हर वह बात जो लोगों को परमेशवर से दूर रखती है, उनसे वह मुक्त करते हैं - ५:१; यूहन्ना ८:३६; रोमि ६:१७,१८ ।

"दुष्ट संसार"- "बुरा युग" इच्छाएँ उद्देश्य आदर्श और इस युग (जैसा कि हर एक युग में है) दुष्ट हैं । देखें यूहन्ना ३:१६; ७:१७; रोमि ३:१६,२३; १२:२;१ यूहन्ना २:१६; ५:१६ । हम इस तरह से बचाए जाते हैं । हमारे अपराधों को हमसे ले जाने और दोष से बचाने के लिए, मसीह मरे (रोमि ८:१) । जब हम मन बदलते हैं और उन पर भरोसा रखते हैं, वह हमें माफ करते हैं और यहोवा परमेश्वर का आत्मा हममें आता है । तब हमें बल मिलता है, कि संसारिकता को त्यागें और परमेश्वर के लिए जिएँ । तभी मसीह हमें दुनिया की बाँधनेवाली ताकत से शुद्ध करना शुरू करेंगे । आख़िर में वह लौटेंगे और दुष्टता से पूरी तरह छुड़ाएंगे । यीशु मसीह की क्रूस पर मौत जो अधर्मियों के लिए थी, इसकी नींव है । इसके बिना कोई मुक्ति नहीं है ।

१:५ ***"स्तुति"***

१:६ ***"मुड़कर"***-वे सभी परमेश्वर की सच्चाई से मुकरने लगे थे । (जिन्होंने उन लोगों को बुलाया था) । क्योंकि दुष्ट लोगों ने उन्हें धोखा दिया था, लेकिन वे पूरी तरह से बदले नहीं थे ।

"तुम्हें बुलाया"-रोमि १:६; ८:३० पर नोट्स देखें ।

"भिन्न प्रकार की विचारधारा"-यह शिक्षा यह थी कि यहूदी शास्त्र का पालन करने से मुक्ति मिलेगी (३:१-५; ४:६-११, २१; ५:२-४, प्रेरित १५:१,५ देखें) । पौलुस ने उन्हें मसीह का यह संदेश सुनाया कि मुक्ति मुफ्त ईनाम है और विश्वास से मिलती है ।(२:१६;३:६-६,२६; ५:५,६ तुलना करें। रोमि ४:५; ६:२३; इफि २:८,६) । झूठे शिक्षक झूठा संदेश देते हुए आए और बताया कि मसीह पर विश्वास करना काफी नहीं है । उन्हें मूसा द्वारा मिले शास्त्र में लिखी बातों को मानना है । यह भी कि मुक्ति के लिए खुद भी कुछ करना है। इस गलत शिक्षा को बहुत से गलातिया के मसीही स्वीकार कर रहे थे ।

१:७ ***"शुभसंदेश"***-गॉस्पल का मतलब है अच्छा संदेश। यह सिखाना कि मसीही लोगों को यहूदी नियमशास्त्र (व्यवस्था) का पालन करना है, शुभसंदेश नहीं था । (३:१०; प्रेरित १५:१०) । आज भी दुनिया में बहुत से शुभसंदेश हैं, लेकिन ऐसी कोई शिक्षा यीशु को छोड़ किसी और तरीके से मुक्ति मिल सकती है, शुभसंदेश नहीं है । ऐसी भी कोई शिक्षा जो किसी धार्मिक प्रथा, अच्छे काम या अपने प्रयास को मसीह से मिलनेवाली मुक्ति में जोड़ना चाहती है, वह खुशी का संदेश है ही नहीं ।

"कुछ लोग तुम्हे तकलीफ दे रहे हैं"-४:१७,५:१०,१२; ६:१२,१३ ।

"भ्रष्ट"-बहुत कम ऐसे लोग हैं जो मसीह के संदेश को जैसा है, बिना बदले स्वीकार करते होंगे ।

१:८ ***"शापित हो"***-वह शुभसंदेश को दिए जाने पर ज़ोर देता है, और उसमें बदलाव लानेवालों के भयंकर अपराध की तरफ भी इशारा करता है । उसे मालूम था कि खुद यीशु ने उसे मुक्ति का संदेश दिया था । (पद ११,१२), यह भी कि यह संदेश, मुक्ति के लिए सृष्टिकर्ता की ताकत है । (रोमि १:१६) । जो व्यक्ति इसे बदलने की कोशिश में है, वह लोगों से जानते हुए या बिना जाने बूझे मात्र एक मुक्ति के मार्ग को छीन रहा है । देखिए मत्ती २३:१३; लूका ११:५२ । यह मानवता और स्वर्गिक पिता के खिलाफ अपराध है । जो लोग इस अपराध के दोषी हैं, यदि वे अपनी गलती महसूस करके उसे नहीं छोड़ेगे तो दण्ड पाएंगे ।

६ उस शुभसंदेश के अलावा कोई और संदेश सुनाएं, तो वह शापित हो । **जैसा** मैं पहले कह चुका हूँ, अब एक बार फिर
१० कहता हूँ : यदि मेरे सुनाए हुए सुसमाचार से हटकर कोई सुसमाचार सुनाता है, तो वह शाप के आधीन हो । **क्या** मैं मनुष्य
से प्रशंसा चाहता हूँ या जगत के स्वामी से ? क्या मैं मनुष्यों को खुश करने की चेष्टा कर रहा हूँ ? क्योंकि यदि मैं अभी
११ तक मनुष्यों को खुश करने की कोशिश कर रहा हू, तो मैं मसीह का सेवक हो ही नहीं सकता । **लेकिन** भाइयो-बहनो,
१२ मैं तुम्हें बताता हूँ कि जिस शुभसंदेश को मैंने सुनाया था वह मनुष्य का नहीं है। **इसलिए** कि मैंने उसे मनुष्य से हासिल
१३ नहीं किया, न ही मुझे किसी ने सिखाया था, किन्तु मैंने इसे यीशु मसीह से सीखा था । **इसलिए** कि यहूदी मत में मेरे
आचार-व्यवहार के विषय तुमने सुना है, कि मैंने असीमित रूप में, यहोवा की मण्डली को सताया और नष्ट करने का
१४ प्रयत्न किया । **मेरे** अपने देश में और बहुत से लोगों की तुलना में जो यहूदी मत के थे, मैं आगे बढ़ गया था । अपने
१५ पूर्वजों की परम्पराओं से अधिक जोश उनकी तुलना में मुझ में था । **किन्तु** जब यहोवा की इच्छा जिन्होंने मुझे अपनी बड़ी
१६ दया से माता के गर्भ से बुलाया था, **जिससे** अपने बेटे को मुझ में प्रगट करे ताकि मैं गैर यहूदियों में यह संदेश दूँ ।
१७ तब न तो मैंने अपनी इच्छा की परवाह की, न ही मेरे से पहले नियुक्त किए गए प्रेरितों से सलाह ली, किन्तु सीधे अरब
१८ चला गया और फिर से वापस दमिश्क आ गया । **तीन** साल बाद, मैं पतरस से मिलने यरूशलेम गया और पन्द्रह दिन
१९,२० उसके साथ रहा । **वहाँ** यीशु के भाई याकूब को छोड़कर मेरी भेंट यीशु के किसी और प्रेरित से नहीं हुयी । **यह** सब

१:९ वह इस पर ज़ोर डालने के लिए दोहराता है । स्वर्गिक पिता के दिखाए हुए सत्य के साथ खिलवाड़ करने की दुष्टता के बारे में हमें शक नहीं करना चाहिए । तुलना करें प्रका. २२:१८,१९ । झूठे शिक्षकों के बारे में अन्य पद मत्ती ७:१५; २४:११; प्रेरित २०:२९,३०; रोमि १६:१७,१८; २ कुरि ११:१३-१५; १तिमो ४:१,२; २ तिमो ४:३,४; २ पत २:१; यहूदा ४ ।

१:१० *"क्या"*- पौलुस के दुश्मनों ने उस पर यह दोष लगाया कि वह वही सिखाता था, जो लोग सुनना माँगते थे ? पद ६-९ से दिखना चाहिए कि जो कुछ इसके विपरीत है, वही सच है । पौलुस हमेशा वही सिखाता था जो यहोवा परमेश्वर ने उस पर प्रगट किया था । उसे इस बात का डर नहीं था कि किसी को वह बात बुरी लगेगी (प्रेरित २०:२०; २६,२७) । जहाँ तक उसके संदेश का सवाल था, वह यीशु के अलावा किसी और को खुश नहीं करना चाहता था । वह जानता था कि चाहे लोगों को कुछ पसन्द आए या न आए, सच्चे सन्देश को दिया जाना ज़रूरी है । यदि ऐसा रवैया न हो तो कोई मसीह का सच्चा सेवक नहीं हो सकता। लेकिन लोगों को मसीह में लाने और बढ़ाने के लिए वह लोगों को खुश करने के लिए तैयार था ।

देखें रोमि १५:१-३; १ कुरि ९:१९-२३; १०:३३ । हम इन दोनों ही बातों में पौलुस को अपना नमूना बनाएँ ।

१:११ देखें २ पत १:१६; इब्रा २:३,४; प्रेरित १:१ -३,८; २:३२; यूहन्ना ७:१६,१७;१२:४९,५०; लूका २४:४५-४८ ।

१:१२ इफि ३:२-५; रोमि १६:२५-२७; १ कुरि १५:३; प्रेरित २२:१४,१५; २६:१५,१६ ।

यह सबसे ज़्यादा जरूरी है । पौलुस इस पर ज़ोर इसलिए डालता है, क्योंकि जो झूठे शिक्षक गलातिया गए थे वे इसका इन्कार कर रहे थे। वह किसी ऐसी बात को बाँट नहीं रहा था, जो उसे लोगों से मिली और वह उन्हें गलत समझ बैठा । स्वयं यीशु ने यह सच्चाई दी थी, इसलिए वह पूरे अधिकार से कह सकता था । उसे यह ज़रूरत नहीं थी कि किसी और सुसमाचार से तुलना करके यह जाने कि यह सच है या नहीं । (लेकिन हमें अपने सुसमाचार की तुलना पौलुस के सुसमाचार से करनी चाहिए । यदि यह उसके समान नहीं तो यह सच्चा शुभसंदेश नहीं । देखें २ कुरि. १:१२-१४ ।)

१:१३,१४ प्रेरित ७:५८; ८:१-३,९:१-२; फिलि ३:४-६,१ तिमो १:१३ ।

१:१५ *"माता के गर्भ से"*- यर्मि १:५ और यूहन्ना १५:१६ से मिलान करें ।

"अपनी बड़ी दया" -पद ६ पौलुस के जन्म के बहुत बाद, यहोवा परमेश्वर से उसे यह बुलाहट मिली थी, ताकि वह उसे उद्देश्य को पूरा करे जिसके लिए उसे जन्म से अलग किया गया था ।

१:१६ पौलुस पर मसीह को प्रगट किया गया था (प्रेरित ९:३,४; १कुरि ९:१) । यहाँ वह स्वयं में मसीह के प्रगट किए जाने के परमेश्वर के इरादे की बात करता है । पौलुस समझ गया था कि मसीह उस में रहते हैं, काम करते हैं ताकि वह दूसरे लोगों को मसीह के विषय बताए (२:२०; २ कुरि ४:१०,११; कुलु १:२९) । सभी विश्वासियों के लिए यह परमेश्वर का उद्देश्य है ।

"गैर यहूदियों" - २:७; प्रेरित २२:२१; २६:१७,१८; इफि ३:८ । बाईबल में *"अन्य जाति"* का अर्थ है 'गैर यहूदी' ।

१:१७ यही वह स्थान है जहाँ वह अरब की यात्रा के बारे में कहता है । प्रेरित ९:१९-२२ में बतायी सभी घटनाओं के समय ही में यह घटा होगा । पौलुस यह नहीं बताता कि वहाँ वह क्यों गया था । ज़रूर वह प्रार्थना, मनन और संगति के लिए वहाँ गया होगा । उसने किसी इंसान की सलाह नहीं स्वर्गिक पिता की सलाह ली (पद १६) ।

१:१८,१९ प्रेरित ९:२६-३० । शायद उस समय दूसरे प्रेरित यरूशलेम में नहीं थे । पतरस और याकूब ने उसका स्वागत किया, तो ज़रूर दूसरे लोगों ने जो उनके साथ थे, उसका स्वागत किया होगा ।

१:२० यह बात वह बड़ी गंभीरता से करता है, क्योंकि सच्चे शुभसंदेश का स्वीकार किया जाना खतरे में था । अगर उन्होंने विश्वास न किया होता तो वे अपने किए हुए को जारी रखते (पद ६) ।

२१ झूठ नहीं, मैं परमेश्वर को उपस्थित जानकर लिख रहा हूँ । **इसके** पश्चात् मैं सीरिया और किलकिया इलाके में आया ।
२२,२३ **किन्तु** मसीह में यहूदिया की कलीसियाओं ने मेरा चेहरा अब तक किसी ने नहीं देखा था । **उन्होंने** यह केवल सुना ही
था "जो हमें पहले सताया करता था, अब वह स्वयं उस संदेश को सुना रहा है, जिसे नाश करने की कोशिश किया
२४,**२** करता था । **उन्होंने** मेरे परिवर्तन के लिए जग के स्वामी की स्तुति की । **चौदह** वर्ष के बाद मैं तीतुस और बरनबास
२ के साथ फिर से यरूशलेम गया । **स्वर्गीय** मार्गदर्शन पाने के बाद मैंने ऐसा किया था, ताकि मैं उनके सामने उस शुभसंदेश
को रख सकूँ, जिसे मैंने गैर यहूदियों को सुनाया था । ऐसा मैंने आदरणीय लोगों के साथ अकेले में किया, ताकि मेरी
३ दौड़ बेकार न ठहरे । **यहाँ** तक कि तीतुस जो यूनानी था और मेरे साथ था, खतना कराने के लिए मजबूर नही किया गया ।
४ **यह** उन झूठे भाइयों के कारण हुआ जिन्हें गुप्त तरीके से लाया गया था । वे मसीह यीशु में जो हमारी आज़ादी थी, उससे
५ हमें हटाने के लिए, लुके-छुपे जासूसी कर रहे हैं। **हमने** उनके हाथों में एक क्षण के लिए भी अपने आप को सुपुर्द नहीं
६,७ किया, **ताकि** शुभसंदेश की सच्चाई तुम्हारे साथ बनी रहे। **इसके** विपरीत उन्होंने देखा, कि खतनारहित लोगों के
८ शुभसंदेश की ज़िम्मेदारी मुझे सौंपी गयी है जिस तरह से खतनावालों की पतरस को दी गयी थी । **जो** पवित्र आत्मा पतरस
६ की प्रेरिताई सेवा में कार्य कर रहा था, वही प्रभावशाली तरीके से गैरयहूदियों में मुझ में कार्य कर रहा था । **याकूब,** कैफा और
यूहन्ना जो खंबे समझे जाते थे, जब उन्होंने उस कृपा को देखा जो मुझे मिली थी, तब बरनबास और मुझे सहभागिता का दाहिना

१:२१ प्रेरित ६:३०; ११:२५,२६ । तारसुस किलकिया में (तुर्किस्तान का एक भाग) था । अन्तकिया सीरिया में था ।

१:२२ पौलुस का काम दूसरे इलाकों में था । उसने बहुत कम समय यरूशलेम में बिताया । इसलिए यहूदिया के अधिकांश लोग उसे नहीं जानते थे ।

१:२३,२४ वे पौलुस में बदलाव को जानते थे, लेकिन इसके लिए उसकी बड़ाई नहीं करते थे । जिस परमेश्वर ने उसे बदला था, वे उसकी बड़ाई करते थे । पौलुस यही चाहता भी था । (१ कुरि ३:४-७; इफि १:६,१२,१४; फिलि १:११)

२:१-१० पहले अध्याय के शुरू किए गए विषय को वह जारी रखता है । वह वहाँ कहता है कि स्वर्गिक पिता ने उसे प्रेरित होने के लिए बुलाया और उसे शुभसंदेश दिया । यहाँ वह कहता है कि दूसरे प्रेरितों ने उसे प्रेरित कबूल किया और पहचाना, कि जिस संदेश को वह दे रहा था, वही उनका भी था ।

२:१ ***"बरनबास"*** - प्रेरित ४:३६,६:२७;११:२५,३०; १२:२५;१३:२; १५:२ ।

"तीतुस" - २ कुरि २:१३, ७:६; २ तिमो ४:१०,तीतुस १:४ ।

२:२ ***"स्वर्गीय मार्गदर्शन"*** - परमेश्वर द्वारा दिया गया ज्ञान ।

"अकेले में"-शुभसंदेश के बारे में यरूशलेम की कलीसिया अगुवों के साथ वह किसी वाद-विवाद में नहीं फँसना चाहता था । वह इस आशा में था, कि अकेले में वे शुभसंदेश के विषय में पूरी तरह से सहमत होंगे । उसके बाद इस के निष्कर्ष को जनता के सामने लाया जाएगा ।

"ताकि मेरी दौड़ बेकार न ठहरे"-पौलुस को उस बात की शंका नहीं थी कि उसके पास का शुभसंदेश सच्चा है भी या नहीं । उसे अच्छी तरह मालूम था कि उसके पास था । (१:१२) । उसे डर था कि यदि दूसरे प्रेरित उसका और उसके संदेश का विरोध करेंगे तो गैर यहूदियों के बीच उसका काम बर्बाद हो जाएगा ।

२:३ उन दिनों खतना महत्वपूर्ण चर्चा का विषय बना रहता था - पद १२:; ५:२,३,६,११; ६:१२-१५, प्रेरित १५:१-५;रोमि ४:६-१६। सवाल यह था कि क्या गैर यहूदी मसीही लोगों को यहूदी धर्म स्वीकार करके, खतना करके, मूसा द्वारा दिए गए नियमशास्त्र को मानना है ? पौलुस और दूसरे प्रेरितों का उत्तर था ***"नहीं"***। तीतुस पर इस बात को जाँचा गया । वह गैर यहूदी था । यरूशलेम में प्रेरितों ने एक 'सच्चे विश्वासी' की तरह ग्रहण किया था, हालाँकि उसका खतना नहीं हुआ था ।

२:४ ये ***"झूठे भाईयों"*** में यहूदी थे, जिन्हें यरूशलेम के विश्वासियों ने अपने बीच में स्वीकार किया था । इन यहूदियों का यह लक्ष्य था कि सारे यीशु के माननेवालों (चाहे यहूदी या गैर यहूदी) को मूसा के नियमशास्त्र रीति विधियों में लाएँ । खास सवाल तो यह था कि लोग मुक्ति कैसे पाएँ- नियमशास्त्र को मानने से या यहोवा परमेश्वर की असीम कृपा से ? उत्तर साफ है - ५:१-४; प्रेरित १३:३८,३६; १५:१०,११; रोमि ३:२४-२८; ६:१४; ७:४ ।

२:५ पौलुस यह जानता था कि एक पल भी यदि झूठी शिक्षा को अपनाया जाए तो गलातिया की कलीसिया को बड़ी हानि होगी । कुछ भी करते समय वह इस बात का ध्यान रखे हुए था, कि दूसरों पर क्या असर होगा ।

२:६-६ पौलुस लोगों को ऊपर उठाने के पक्ष में नहीं था, चाहे वह स्वयं हो या और कोई-१ कुरि.३:५,२२,२३ । उसके लिए इस विषय में खास बात यह नहीं थी कि लोग क्या लगते हैं, या उनके पास कितने बड़े अवसर हैं या ऊँचे पद पर है या दूसरों के सामने क्या इज़्ज़त है । उसके लिए खास मुद्दा यह था कि जो वचन उसे दिया गया, उसे वे वैसा ही स्वीकार करेंगे या नहीं । वह गलातिया की मण्डलियों को सूचना दे सका कि पतरस, याकूब और यूहन्ना जो यरूशलेम की मण्डली के अगुवे के, शुभसंदेश के मतलब के सम्बन्ध में उसके साथ सहमत थे (पद ६) ।

७,८ और ६ पदों में बिना खतनावाले गैर यहूदियों और खतनावाले यहूदियों की तरफ इशारा करते है । उन दिनों में इसी तरह की भाषा लोग इस्तेमाल करते थे ।

१० हाथ दिया । उन्होंने यह सलाह मान ली कि हम गैर यहूदियों के पास जाएँ और वे यहूदियों के पास, **परन्तु** वे चाहते थे
११ कि हम गरीबों का ध्यान रखें । मैं भी वही करने के लिए तैयार था । **जब** पतरस अन्ताकिया आया, मैंने उसके साम्हने
१२ उसका विरोध किया, क्योंकि वह दोषी था । **इसलिए** कि कुछ लोग याकूब के पास आए, पहले वह गैरयहूदियों के साथ
१३ खाना खाता था । किन्तु जब वे वहाँ पहुँचे, खतनावालों के डर से उसने अपने आपको अलग कर लिया । **दूसरे** यहूदी
१४ भी उसके साथ कपट में पड़ गए, यहाँ तक कि बरनबास भी उसी कपट में बह गया । **जब** मैंने यह देखा, कि वे शुभसंदेश
के सत्य के अनुसार बर्ताव नहीं कर रहे है, सबके सामने मैंने पतरस से कहा, ''यहूदी होकर यदि तुम गैर यहूदियों की
तरह जीओगे, यहूदियों के समान नहीं, तो तुम और गैर यहूदियों को यहूदियों की तरह जीने के लिए क्यों मजबूर करते
१५,१६ हो ? हालाँकि हम जन्म से यहूदी हैं और गैरयहूदियों में से नहीं, **तौभी** यह जानकर कि इन्सान नियमशास्त्र के अनुसार
काम करने से नहीं, ''बल्कि सिर्फ यीशु मसीह पर विश्वास लाने से निर्दोष ठहरता है । हमने भी यीशु मसीह पर विश्वास
किया ताकि हम भी यीशु पर विश्वास करने से निर्दोष ठहराए जाएँ न कि नियमशास्त्र के अनुसार । क्योंकि नियमशास्त्र
१७ के अनुसार करनेवाला कोई भी इन्सान निर्दोष साबित नहीं होगा । **हम** जो मसीह में निर्दोष ठहरना चाहते है अगर खुद

२:१० जब पौलुस गैरयहूदियों तक शुभसंदेश को ले गया, दूसरे प्रेरित नहीं चाहते थे कि वह यहूदिया में यहूदी मसीहियों की शारीरिक आवश्यकताओं को भूल जाए । पौलुस खुद वहाँ के गरीबों की ज़रूरत पूरा करने में दिलचस्पी लिया करता था । - प्रेरित २४:१७; रोमि १५:२५-२८; १ कुरि. १६:१-४; २ कुरि ८,६ । एक महत्वपूर्ण विषय के बीच ही में गरीबों की मदद का मुद्दा दिखाता है, कि इस सेवा को कितना महत्व का समझा गया । देखें निर्गमन २३:११; व्य १५:७,८; भजन ४१:१; नीति १४:३१,१६:१७,२१:१३,२६:७;३१:६; मत्ती १६:२१; २ कुरि ६:६ ।

२:११-२१ इस हिस्से में पौलुस अपनी प्रेरिताई के पद के पक्ष में कहता है । वह जानता था कि मसीह ने शुभसंदेश को उस तक पहुँचाया था । इसलिए खुले आम हर एक उस जन के खिलाफ बोलने या करने के लिए तैयार रहा करता था, ताकि विवाद के मुद्दे पर प्रकाश डाले । शुरू के प्रेरितों में पतरस अगुवा था । वह बिना कमज़ोरी का नहीं था। एक समय आया जब शुभसंदेश की खतिर पौलुस ने पतरस को डाँटा ।

२:११ हमें यह नहीं मालूम कि पतरस अन्तकिया कब आया या क्यों आया । उस समय अन्तकिया, एशिया का सबसे बड़ा शहर था और गैर यहूदी मसीहियों का केन्द्र (प्रेरित ११:१६-२६;१३:१-३) ।

२:१२ ***''याकूब के पास''***-का मतलब यह नहीं होगा, कि याकूब ने इन लोगों को भेजा था । इसका सिर्फ यह अर्थ हो सकता है कि वह यरूशलेम से वहाँ गया, जहाँ याकूब एक अगुवा था । प्रेरित १५:१३,२०,२४ से मिलान करें । पतरस और यूहन्ना के साथ मिलकर याकूब ने पहले ही पौलुस को अपनी दोस्ती का हाथ दिया था, यह दिखाने कि पौलुस द्वारा दिए जानेवाले संदेश से वे सहमत हैं (पद ६) ।

जो लोग अन्तकिया आए थे, पौलुस उन्हें ''खतनेवाले'' कहता है । वे यहूदी मत में से आए मसीही थे जो यह सिखा रहे थे कि जिन यहूदियों ने मसीह को अपनाया है, उन्हें यहूदी मत के नियमों और विधियों को मानते रहना चाहिए ।

उनके हिसाब से यदि गैर यहूदी धर्मों से मसीह में आए लोग जब तक यहूदियों की प्रथाओं को मानते नहीं, तब तक उन्हें मिलकर साथ में खाना भी नहीं खाना चाहिए । पतरस यह जान गया था, कि उसका रवैया गलत था (१०:२७-२६; ११:२-१७) । इसलिए उसने अन्तकिया में गैरयहूदी मत से आए विश्वासियों के साथ खाना खाया । लेकिन जब खतनावाला समूह वहाँ आया तब वह उनसे किनारा करने लगा ।

२:१३ ***''कपट में पड़ गए''***-ये शब्द पौलुस ने पतरस के व्यवहार को दिए । ऐसा इसलिए था क्योंकि पतरस एक बात को मानता था (यह कि गैर मतों से आए हुए मसीह के लोगों के साथ खाना ठीक है) । लेकिन उसका बर्ताव उसके विश्वास के विपरीत था ।

२:१४ पौलुस जान गया कि स्थिति गंभीर थी । पतरस सच्चाई को जानता था लेकिन उसके हिसाब से चल नहीं रहा था । उसके कार्य सच्चे शुभसंदेश के बारे में सवाल उठा रहे थे । ऐसा दूसरों के शब्दों से भी हुआ था (प्रेरित १५:१,५)।

''गैरयहूदियों की तरह जीओगे''-पौलुस का मतलब यह था कि पतरस खुद तो यहूदियों की रीति विधियों और नियमा का पालन नहीं कर रहा था ।

''मजबूर''-पतरस अपने शब्दों से गैरयहूदियों पर दबाव नहीं डाल रहा था, लेकिन अपने काम से । इसलिए सच्चाई के कारण पौलुस उसे डाँटता है । पद १५-२१ में वह शुभसंदेश का मतलब बतलाता है । इस पूरी चिट्ठी में जो कुछ भी लिखा है, वह पदों में लिखी सत्य की नींव पर है ।

२:१५ पौलुस एक यहूदी था और उसी दृष्टिकोण से बोलता है ।

२:१६ वह कहता है कि यहूदी मसीही अगुवों ने एक सीधी सादी सच्चाई सीख ली थी- मूसा से मिले नियमशास्त्र की बातों को मानने से मुक्ति नहीं मिलती है । हर एक जन चाहे वह यहूदी हो या गैर यहूदी, मसीह पर विश्वास से धर्मी ठहराया जाता है (प्रेरित १३:३८,३६; रोमि ३:२४-२६,२८,३०,५:१) । ऐसी कोई भी कोशिश कि यहूदी धार्मिक बातों को माननाा ज़रूरी है, शुभसंदेश के निचोड़ पर एक हमला है । ऐसा आज भी है । ऐसी कोई शिक्षा कि किसी धार्मिक नियम को मानने से मुक्ति मिलेगी या मुक्ति में सहायक होगी, सरासर झूठ है । कोई भी ऐसी शिक्षा कि हमारी मेहनत, अच्छे काम और इन्सानी योग्यता से उद्धार मिलता है, गलत है ।

२:१७ ऐसे लोगों के लिए जिनके पास सच्चाई के बारे में पूरी समझ नहीं है, पौलुस, शुभसंदेश के खिलाफ संभावित शिकायत के लिए जवाब देता है । यहाँ भाषा काफी अटपटी है, लेकिन यह संभव है कि यह शिकायत वही है, जैसी रोमि ६:१,१५ में है । क्या इसका मतलब

१८ ही गुनाहगार निकले, तो क्या मसीह ने हमें गुनाह करने के लिए उभारा है ? बिल्कुल नहीं **क्योंकि** जो कुछ मैंने ढा दिया
१६ अगर उसे फिर बनाऊँ, तो खुद मैं ही परमेश्वर के कानून को तोड़नेवाला हुआ । **क्योंकि** मैं नियमशास्त्र ही के द्वारा
२० मर गया, ताकि यहोवा परमेश्वर के लिए जीऊँ । मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं नहीं, लेकिन मसीह
मुझमें जीवित है । इसलिए इस देह में जो जीवन मैं जी रहा हूँ, यह परमेश्वर के बेटे यीशु की विश्वासयोग्यता की वजह
२१ से है, जिन्होंने मुझसे प्यार किया और अपने आप को मेरे लिए दे दिया । **मैं** परमेश्वर की असीमित कृपा को नज़रअन्दाज
नहीं करता हूँ, क्योंकि अगर नियमशास्त्र से निर्दोष ठहराया जाना होता, तो मसीह का मरना बेकार हुआ होता ।
३ **हे** मूर्ख गलातियावासियो, तुम्हें किसने मुग्ध कर लिया है, कि तुम सत्य को न मानो । यीशु बिल्कुल तुम्हारी आँखों के
२ सामने मानो क्रूस पर चढ़ाए हुए दिखाए गए थे । मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ: क्या पवित्र आत्मा तुमने नियमशास्त्र
३ का पालन करने से पाया था, या विश्वास से सुनने के व्दारा? **क्या** तुम इतने बेवकूफ हो? पवित्रआत्मा में शुरूआत करने के
४ बाद अब क्या अपनी इच्छा के अनुसार करने से सिद्धता को प्राप्त कर सकोगे? **क्या** तुमने इतना सब कुछ बेकार ही सहा ?
५ यदि हाँ, तो सब व्यर्थ ठहरा । **जो** तुम्हें पवित्रता आत्मा देते हैं, और तुम्हारे बीच में अद्‌भुत कार्य करते हैं क्या वह नियमशास्त्र
६ के आधार पर करने के कारण करते हैं या तुम्हारे विश्वास से सुनने के कारण ? **जैसा** अब्राहम ने भरोसा किया और

यह हुआ कि मसीह पर विश्वास करना दुष्टता को बढ़ावा देना है? उत्तर है ***"बिल्कुल नहीं"*** (रोमि ३:३० में इस बात पर नोट्स देखें । रोमि अध्याय ६ और नोट्स देखिए ।

२:१८ इसका अर्थ लगता है : यह इन्कार करने के बाद कि मुक्ति के लिये परमेश्वर ने जो व्यवस्था मूसा के द्वारा दी थी, यदि मैं (या और कोई) उसी को फिर से मुक्ति का एक ज़रिया माने, तो मैं इस पाप का दोषी हो जाता हूँ और व्यवस्था भी मुझे दोषी ठहराएगी ।" इब्रा २:१-४,६:४-६; १०:२६-२६;१२:२५ ।

२:१६ ***"मर गया "***- रोमि ७:१-४ नियम शास्त्र को मुक्ति के लिए आधार बनाने से दुष्टता को बढ़ना नहीं मिलता है । इससे विश्वासी को हिम्मत मिलती है, *"परमेश्वर यहोवा के लिए जीएँ"* ।नियम शास्त्र, बजाए जीवन देने के, मौत का हथियार बन गया (रोमि ७:६-११,२कुरि३:६) ।

२:२० ***"मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया"***-केवल पौलुस के लिए नहीं, लेकिन हर एक के लिए यह सच है । रोमि ६:३-८ देखें । मसीह उनकी जगह मरे और यीशु की मौत को परमेश्वर विश्वासियों की मौत समझते हैं । एक नए तरीके के जीवन के लिए यही एक रास्ता है । आत्मिक जीवन के लिए, विश्वासी ज़रिया नहीं है । मसीह ही स्त्रोत हैं । यह जीवन जीने के लिए विश्वासियों के शरीर और दिमाग से नया जीवन नहीं आता है, लेकिन उन में रहनेवाले मसीह से । रोमि ८:१-१० से तुलना करें । नया जीवन परमेश्वर के बेटे में विश्वास से जीया जा सकता है। सच्चा मसीही जीवन यीशु पर भरोसा रखने से शुरू होता है और इसी तरह ज़ारी भी रहता है (२ कुरि. ५:७; कुलु २:६,७) । जो कुछ पौलुस दूसरों को करने के लिए कहता है, वह खुद भी करता है रोमि ६:११ ।

२:२१ ***"अपने आप को मेरे लिये दे दिया"***-१:४; रोमि ५:६-८; १२:२१ यह शिक्षा कि नियम शास्त्र (यहूदी धर्म व्यवस्था) के मुताबिक करने से मनुष्य मुक्ति पा सकेगा, मसीह की मौत को बेफायदा और बिना काम का बना देती है । इसलिए इसे रद्द करने में पौलुस को कोई मुश्किल नहीं । यदि लोग अपने सम्बन्ध को अपने करने के द्वारा सुधार सकते तो यीशु को आकर मरने की क्या जरूरत थी यह साफ जाहिर है - कृपा के द्वारा मुक्ति या कोई मुक्ति नहीं ।

३:१ यह निरी बेवकूफी है यदि यह विश्वास करें कि यीशु बेमतलब मर गए । लेकिन झूठे मसीही इन मसीहियों को ऐसी स्थिति में ढकेलने की कोशिश कर रहे थे । ऐसा तो वे नहीं कह रहे थे कि यीशु यूँ ही मर गए । लेकिन यीशु की कुर्बानी के साथ नियम शास्त्र को मानने की ज़रूरत को दिखाकर वे अप्रत्यक्ष तरीके से सिखा रहे थे - कि यीशु की मौत की कोई ज़रूरत नहीं है । जब पौलुस ने उनके बीच वचन दिया था, तो ऐसा नहीं सिखाया था ।

३:२ वह अपने अनुभव को एक सबूत रखकर कहता है, कि उसने यह सच्चाई सिखायी थी । जब उन्होंने उसके दिए गए सत्य पर भरोसा किया, उन्होंने परमेश्वर के आत्मा को पाया (तुलना करें ४:६; इफि १:१३; प्रेरित १०:४४; रोमि ८:१५)। परमेश्वर ने उनके नियम शास्त्र के अनुसार करने के आधार पर आत्मा को उनके अन्दर रहने के लिए नहीं दिया था । विश्वास से ही उन्होंने उसे हासिल किया था । किसी ने भी आज तक रीति विधि और प्रथा को मानने से परमेश्वर के आत्मा को प्राप्त नहीं किया था । ध्यान दें, लोगों के पास परमेश्वर का आत्मा यों ही नहीं होता है । मसीह पर विश्वास से इसे कबूल किया जाता है । यूहन्ना १४:१७ देखें ।

३:३ जब उन्होने मसीह पर भरोसा किया, उन्होंने वह अनुभव किया जो परमेश्वर कृपा से प्राप्त होता है । क्या यह सोचना बेवकूफी नहीं थी, कि हमारी कोशिश नियम और नियमशास्त्र की रीतिविधियाँ उन्हें आगे ले जा सकती है ? या हमे भी ले जा सकती हैं ।

३:४ उनके बारे में उसको शक है । क्या झूठे शिक्षक अपनी कोशिशों में कामयाब होंगे ? क्या वहाँ के मसीही एक ऐसे बिगड़े संदेश को कबूल करेंगे ? क्या वे उन पुरस्कारों को खो देंगे जो उनकी तकलीफें उन्हें दिलवा सकती थीं ? उनके बर्ताव से उसे आश्चर्य और शक होता है (४:११,२०) ।

३:५ वह पद २ के प्रश्न को अलग रूप में दोहराता है । झूठी शिक्षा नकारने के लिये जो उन्होंने सुना था, वह चाहता था कि वे सोचें और उनके सत्य के ज्ञान का उपयोग करें ।

३:६ ***"अब्राहम"*** पौलुस का उद्देश्य यह है कि यहोवा परमेश्वर बिना नियमशास्त्र के विश्वास के आधार पर निर्दोष ठहराते हैं ।
"धार्मिकता" - उत्पत्ति १५:६; रोमि ४:३ ।

७ वह उसके लिए धार्मिकता गिना गया । **इसलिए** यह समझ लो, कि वे जो विश्वास करते हैं, वे ही अब्राहम के बेटे-बेटियाँ
८ हैं । **यह** बात ध्यान में रखकर कि विश्वास व्दारा गैरयहूदियों को धर्मी ठहराया जाएगा, शुभसंदेश ने पहले ही से यह कहते
९ हुए घोषणा की थी "सभी राष्ट्र तुममे आशीष पाएँगे" **इसलिए** जिनके पास विश्वास है वे विश्वास करने वाले अब्राहम के साथ
१० आशीषित हैं । **इसलिए** कि जितने नियमशास्त्र के कामों पर निर्भर हैं, वे शापित हैं । क्योंकि यह लिखा है "हर एक वह जन
११ शापित है जो नियमशास्त्र में लिखी हर एक बात में बना नहीं रहता है ।" **परन्तु** यह स्पष्ट है कि यहोवा की दृष्टि में
कोई भी इसलिए धर्मी नहीं ठहरता क्योंकि वह नियमों का पालन करता है । इसलिए कि धर्मी ठहराया हुआ व्यक्ति विश्वास
१२ से जीवित रहेगा । **नियमशास्त्र** विश्वास से नहीं हैं, किन्तु "जो व्यक्ति उनका पालन करता है उनके द्वारा जीवित रहेगा"
१३ **मसीह** ने हमें नियमशास्त्र के शाप से आज़ाद किया है (इसलिए कि लिखा है, कि प्रत्येक वह व्यक्ति जो क्रूस पर चढ़ाया
१४ जाता है शापित है") **ताकि** अब्राहम की आशीष यीशु द्वारा गैर यहूदियों तक पहुँचे जिससे हम विश्वास द्वारा पवित्र आत्मा
१५ की प्रतिज्ञा पाएँ । **भाइयो-बहनो,** मैं लोगों की जीवन शैली की बात करता हूँ : एक बार जब मनुष्य द्वारा बाँधी वाचा

३:७ रोमियों ४:११,१२,१६,१७ यहाँ ***"बेटे-बेटियाँ"*** का अर्थ है आत्मिक वारिस ।

३:८ उत्पत्ति १२:३; १८:१८;२२:१८ ।

"शुभसंदेश"-रोमि ३:१०;४:३ ।

"तुम में आशीष"-देखें उत्पत्ति १२:३;१८:१८; २२:१८;

३:९ आज हर जगह लोग यह सोचते हैं कि धार्मिक रीति-विधियों को करने से परमेश्वर की आशीषों को हासिल किया जा सकता है । वे सोचते हैं कि परमेश्वर द्वारा मूसा को दिए गए नियमों को पूरा करने से परमेश्वर की भलाईयों को हासिल किया जा सकता है । पौलुस दिखाता है कि ये आशीषें भरोसे से मिलती हैं, अपनी कोशिश से नहीं । आशीषों पर नाट्स देखें उत्पत्ति १२:१-३; गिनती ६:२३-२७; व्यवस्था २८:३-१४; भजन १:१; ११९:१; मत्ती ५:३-१२; प्रेरित ३:२६; इफि १:३ ।

३:१० व्यवस्था २७:२६ देखिए । परमेश्वरीय नियमशास्त्र को पूरा करने से लोग उस आशीष को नहीं पाते जिसकी वे उम्मीद करते हैं । इसका उल्टा होता है । वे दोषी ठहराए जाते हैं । ऐसा कैसे हो सकता है ? ऐसा इसलिए क्योंकि नियमशास्त्र व्यक्ति से पूरा -पूरा पालन आशा करता है, लेकिन कोई व्यक्ति ऐसा ही नहीं कर सकता । नोट्स देखें निर्ग १९:५,६,८, २१-२५। फिलि ३:६ में पौलुस ने कहा था कि उसकी ***"कानूनी धार्मिकता"*** बिना किसी खोट के है । इसलिए कि वह दसवीं आज्ञा को मान न सका, आज्ञा तोड़नेवाले को मिलने का असर उस पर भी था । (रोमि ७:७-१४) । यदि एक व्यक्ति परमेश्वर के किसी एक नियम को भी तोड़ता है तो वह पूरे नियमशास्त्र को तोड़नेवाला हुआ (याकूब २:१०,११)। इसलिए जिन लोगों ने स्वर्गिक पिता के नियमों के आधार पर जीने की कोशिश की उन पर दण्ड आ पहुँचा ।

३:११ यह तीन जगहों में से पहली वह जगह है जहाँ हब्ब.२:४ न्यू टैस्टामॅन्ट में आया है (रोमि १:१७; इब्रा १०:३८) । सृष्टिकर्ता पर भरोसा रखने से इन्सान निर्दोष ठहराया जाता है, न कि नियम शास्त्र के अनुसार करने से ।

३:१२ लैव्य १८:५-नियमशास्त्र और विश्वास दो अलग-अलग सिद्धांत हैं । विश्वास परमेश्वर पर भरोसा रखता है, मुक्ति और हमेशा की जिन्दगी एक ईनाम की शक्ल में पाता है । नियमशास्त्र उसी व्यक्ति को ज़िन्दगी का वायदा दे देता है, जो नियमशास्त्र के सभी नियमों का पालन करता है या कहता है। जो व्यक्ति सिर्फ कोशिश करता है कि वह नियमों का पालन करता है, उसी के लिए जीवन की प्रतिज्ञा नहीं है । नियमशास्त्र मौत और सज़ा को लाता है (पद १०; रोमि ३:१९,२०) ।

३:१३ देखें कि यीशु दुष्टता में पड़े लोगों के लिए क्या करना चाहते हैं । उन्होंने हमारी जगह ले ली और टूटे नियमशास्त्र के परिणाम (शाप) को स्वीकार किया । उन्होंने हमारे अपराधों के लिए सजा ग्रहण की । तुलना करें रोमि ५:६-८; २ कुरि ५:२१; १ पत ३:१८ । छुड़ाए जाने पर नोट्स भजन ७८:३५; और मत्ती २०:२८ में देखें ।

"क्रूस"-व्यवस्था २१:२२,२३ । पुराने समय में इस्त्राएल में अधिकारीगण अपराधी लोगों को टाँग देते थे और पेड़ पर लटकाकर मार देते थे । इस तरह उन्हें लोगों के सामने लज्जित किया जाता था । इसलिए यीशु हमारे अपराधों के लिए मरे और क्रूस की शर्मनाक मौत को हमारे लिए सह लिया । देखें प्रेरित ५:३० १०:३९; १३:२९; १ पत २:२४ । हमें वह फाँसी की सज़ा मिलनी चाहिए थी ।

३:१४ उन्होंने अपने दुखों में हमारी आशीषों के बारे में सोचा । उनके मन में हमारी भलाई के विचार इतने अधिक थे, कि दण्ड और क्रूस की मौत को कुछ भी न समझा । मसीह के सभी विश्वासी नियमशास्त्र के शाप से छुड़ाए गए हैं (रोमि ८:१) । इब्राहिम के द्वारा जिस वायदे को दिया गया था, वे उसके वारिस हो जाते हैं (देखें पद ८,९) ।

"पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा" - लूका २४:४९; यूहन्ना १४:१६,१७; प्रेरित १:४,५;२:३३ । यहाँ की शिक्षा पर ध्यान दें । जिन लोगों ने परमेश्वर की आत्मा को पाया है, उन्हीं तक यहोवा परमेश्वर की आशीष आती है । विश्वास से हम उस आत्मा को पाते हैं । (पद २,५; लूका ११:१३; इफि १:१३) । यह सब ***"मसीह यीशु"*** से मिलता है, किसी और के द्वारा नहीं। इस पद से यह साफ है कि मसीह पर विश्वास लाने से पहले हमारे पास उनका आत्मा नहीं था ।

३:१५-१७ सामान्यतः यह लोगों के बीच करार में होता है - उन होनेवाली बातों के लिये, जिसके बनाने के बाद उन्हें उससे कोई नुकसान नहीं होता ।

१६ पुष्टि हो जाती है, कोई भी उसे खारिज नहीं करता, न ही उसमें कुछ जोड़ता है । **अब्राहम** और उसके वंश से प्रतिज्ञाएँ
की गयी थीं । यहाँ "वंशो से" नहीं लिखा है, किन्तु "तुम्हारे वंश से" जिसका अर्थ है एक व्यक्ति, जो मसीह है ।
१७ **मैं** यह कहता हूँ कि नियमशास्त्र जो ४३० वर्ष बाद दिया गया, वह मसीह में पहले से पुष्ट किया गया, ताकि प्रतिज्ञा सच
१८ ठहरे । **इसलिए** कि यदि विरासत नियमशास्त्र से मिलती है, तो यह प्रतिज्ञा पर आधारित नहीं हुयी । परंतु परमेश्वर ने
१९ उसे अब्राहम को प्रतिज्ञा द्वारा दिया । **फिर** नियम शास्त्र से क्या लाभ है ? जब तक वंश न आ जाए जिससे प्रतिज्ञा की
२० गयी थी, यह अपराधों के कारण जोड़ी गयी थी । यह मध्यस्थ और स्वर्गदूतों द्वारा निर्धारित की गयी थी । **मध्यस्थ** एक
२१ ही पक्ष के लिए नहीं होता है, लेकिन परमेश्वर के साथ ऐसा है । **तो** क्या नियमशास्त्र परमेश्वर के वायदों के खिलाफ
में है ? ऐसा ना हो , क्योंकि यदि ऐसा नियमशास्त्र दिया जाता जो जीवन दे सकता, तो सचमुच धार्मिकता (निर्दोषता)
२२ नियमशास्त्र से होती.) **वचन** ने हर एक को शापित किया है जो पाप में है, ताकि जो प्रतिज्ञा यीशु मसीह पर विश्वास के
२३ फलस्वरूप आती है, उन्हें दी जा सके जो विश्वास करते हैं । **लेकिन** इसके पहले कि विश्वास आए, हमें नियमशास्त्र
२४ के आधीन रखा गया था, ताकि प्रगट होने वाले विश्वास के प्रकट होने तक हम उसी की आधीनता में रहें । **इसलिए**
२५ नियमशास्त्र हमें मसीह तक लाने के लिए शिक्षक ठहरा जिससे हमें विश्वास के आधार पर धर्मी ठहराया जा सके । **किन्तु**

पौलुस यहाँ कहता है कि अब्राहम के साथ बाँधी गयी वाचा में भी ऐसा था । वर्षों बाद जब मूसा के माध्यम से नियमशास्त्र दिया गया, तो इसके ऊपर कोई असर नहीं चल सका ।

३:१६ उत्पत्ति १२:७,१३:१५;२४:७-पौलुस का मतलब है जो वायदा परमेश्वर ने अब्राहम को दिया, मसीह उसके हकदार थे । वह अब्राहम के वंश में से थे । (मत्ती १:१) । मसीह के लोग, तभी अब्राहम के आशीषों के हकदार हैं, जब वे मसीह से जुड़े हैं और संगी वारिस हैं (पद १४,२९; रोमि ४:१३; ८:१७) ।

३:१८ जिस तरह से नियमशास्त्र और विश्वास अलग सिद्धांत हैं (पद १२), उसी तरह से नियमशास्त्र और अब्राहम को दिया हुआ वायदा बिल्कुल फर्क है । अब्राहम के द्वारा लोगों को आशीष दिए जाने का नियमशास्त्र से कोई सम्बन्ध नहीं था । जब स्वर्गिक पिता एक प्रतिज्ञा देते हैं, लोगों को भरोसा करके खुश होना चाहिए । नियम और रीति विधि को करके उनके पूरे होने की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए ।

"विरासत (अधिकार)"-रोमि ४:१३,१४; १ कुरि ३:२२; मत्ती ५:५; इब्रा ११:८-१०; १ पत १:४ । मसीह पर विश्वास लाने वाले पृथ्वी और स्वर्ग के अधिकारी होंगे । जो कुछ मसीह का है, वे उसके हिस्सेदार बनेंगे (इब्रा १:२) ।

"दिया"-(१:६) पौलुस जिस तरह से विश्वास के विषय कहता है, उसी ***"प्रतिज्ञा"*** के बारे में वैसे ही ***"व्यवस्था"*** के बारे में भी। अपनी कोशिश या मेहनत से ईनाम प्राप्त नहीं किया जाता है (रोमि ४:४,५; इफि २:८,९) । इसे आभार के साथ ग्रहण किया जाना चाहिए ।

३:१९ जो लोग नियमशास्त्र के माननेवाले थे, उन्हीं को उसके पालन न करने के परिणाम भुगतने पड़े । तो फिर परमेश्वर जो लोगों को आशीष देना चाहते हैं, नियमशास्त्र क्यों दिया ? रोमि ३:२०; ४:१५; ५:२०; ७:७ देखें । परमेश्वर ने नियमशास्त्र द्वारा पाप को खुले में लाकर इसके स्वभाव और इसकी ताकत को दिखा दिया । इसके ज़रिए से वह लोगों को उनके जीवन में यीशु की आवश्यकता को दिखाना माँगते थे । अपनी जिन्दगी में यीशु की ज़रूरत को पहचानना और अपना लेना र्स्वोत्तम आशीष है ।

"तक"-परमेश्वर ने ओल्ड टैस्टामॅन्ट के नियमशास्त्र का एक समय निश्चित किया था । यह तब तक था जब तक कि मसीह आकर अपने लोगों को मुक्ति न दे दें ।

"स्वर्गदूतों"-इब्रा २:२; प्रेरित ७:३८,५३ देखें । जिस मध्यस्थ के द्वारा नियमशास्त्र आया, वह मूसा था ।

३:२०,२१ यहाँ पौलुस एक संभावित शिकायत का जवाब देना चाहता है -क्योंकि परमेश्वर "एक" हैं (बहुत से तथाकथित ईश्वर कहलाते तो हैं परंतु बहुत से परमेश्वर नहीं हैं) । पहले अब्राहम का वायदों को देना और फिर नियमशास्त्र देना जो वायदों के विरोध में था, क्यों ऐसा किया ? पौलुस कहता है यह तो गलतफ़हमी है । नियमशास्त्र परमेश्वर की आशीषों के खिलाफ में नहीं है । लेकिन जब तक लोग मुक्ति के लिए नियमशास्त्र पर भरोसा रखेंगे, तब तक परमेश्वरीय प्रतिज्ञाएँ किसी काम की नहीं रहेगी । ऐसा इसलिए है क्योंकि नियमशास्त्र न ही आत्मिक जीवन दे सकता है, न ही निर्दोष ठहरा सकता है (रोमि १४:८,३)।

३:२२,२३ तुलना करें रोमि ३:१९-२४ नियमशास्त्र ही लोगों को दोषी ठहराकर उनके चुने हुए (दुष्टता के कारावास) का कारावास में कैद कर सकता है । कोई व्यक्ति भी इस अपनी कोशिश, अच्छे और नियमशास्त्र के पालन, धार्मिक नियमों और रीति विधियों या किसी और तरीके से इस जेल से बच नहीं सकता । मुक्ति, आज़ादी, आत्मिक स्वतन्त्रता और स्वर्गिक पिता की हमेशा की आशीषें सिर्फ उनके बनाए गए रास्ते -यीशु पर विश्वास से मिल सकती हैं । (पद ६,१४,२६; २:१६; रोमि १:१६,१७; ३:२२,२८; यूहन्ना ३:१६,३६; ५:२४; इफि २:८,९) ।

३:२४ नियमशास्त्र लोगों को अपराधों की माफी न दे सका, लेकिन जब तक मसीह में मुक्ति का रास्ता नहीं खुला, तब तक परमेश्वर ने इसे यहूदियों को अनुशासित करने के लिए इस्तेमाल किया । रोमि ७:७-१४ में देखें कि नियमशास्त्र पौलुस का शिक्षक था ।

"विश्वास के आधार पर धर्मी"-२:१६ ।

३:२५ क्योंकि मसीह ने विश्वास के रास्ते को अपने आप में दिखाया, जब लोग मुक्ति के लिए यीशु पर भरोसा कर लेते हैं, मूसा द्वारा दिए नियमशास्त्र का उनके ऊपर कोई हक नहीं है । रोमि ६:१४ ।

३:२६ स्वभाव से लोग परमेश्वर की सन्तान नहीं हैं । हालांकि परमेश्वर सभी लोगों के रचियता हैं, वह सभी के आत्मिक पिता नहीं है (तुलना करें यूहन्ना ८:४४) । मसीह में विश्वास ही से लोग स्वर्गिक पिता की सन्तान बनते हैं । यूहन्ना १:१२,१३।

२६ अब क्योंकि विश्वास आ पहुँचा है, हम शिक्षक के आधीन न रहे। **यीशु** पर विश्वास करने से तुम सब परमेश्वर के
२७,२८ बेटे-बेटियाँ हो । **तुम** में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा पाया है उन्होंने मसीह को ओढ़ लिया है। **अब** न कोई
यहूदी है न गैर यहूदी । गुलाम और आज़ाद में अन्तर नहीं, न ही कोई नर या नारी है । यीशु मसीह में तुम सभी समान
२९,**४** हो, **यदि** वचन के अनुसार तुम मसीह के हो, तो अब्राहम का वंश और मीरास के अधिकारी, **अब** मैं यह कह रहा हूँ
२ कि एक वारिसदार नाबालिग, जिसका सब कुछ पर अधिकार है, गुलाम से भिन्न नहीं है । **पिता** द्वारा नियुक्त समय
३ तक वह निगरानी रखनेवाले और प्रबन्धक के आधीन है । **यहाँ** तक कि हम, अपने बचपन के समय से इस संसार की
४ नींव की वस्तुओं की गुलामी में थे । **किन्तु** जब समय पूरा हुआ, सृष्टि के मालिक ने स्त्री के द्वारा अपने पुत्र को भेजा,
५ जो नियम की अधीनता में उत्पन्न हुए थे । **ताकि** जो लोग उस नियम की पाबन्दी में थे, उन्हें अधिकार प्राप्त बेटे-बेटियों
६ की तरह गोद लिया जा सके । **इसलिए** कि तुम पिता की सन्तान ठहरे, उन्होंने हमारे भीतर अपने बेटे की आत्मा को
७ भेज दिया, जो ''पिता'' कहकर पुकारता है । **इसलिए** अब तुम गुलाम नहीं, किन्तु बेटे-बेटी हो और यदि बेटे-बेटी हो,
८ तो मसीह के द्वारा वारिसदार भी । **परन्तु** एक समय जब सृजनहार को नहीं जानते थे, तो स्वभाव से उनके गुलाम थे
९ जो ईश्वर नहीं थीं । **अब** जबकि तुमने यहोवा को जान लिया है या उन्होंने तुम्हें जान लिया है, यह क्या कि तुम उन
१० कमज़ोर और शुरूआत की बातों की चाह करके फिर से उनकी गुलामी में जा रहे हो । **तुम** दिनों, महीनों और

३:२७ ***''मसीह में बप्तिस्मा''***-रोमि ६:३ के नोट्स देखिए । विश्वास ही लोगों को पिता की सन्तान बनाता है । (पद २६) पानी का बपतिस्मा नहीं, जो भीतरी बदलाव का बाहरी निशान है । परमेश्वर का आत्मा ही मसीह में हमें डुबोता है/जोड़ता है ।

''मसीह को ओढ़ लिया''- इसका मतलब है कि स्वर्गिक पिता के सामने मसीह पर ईमान लानेवाले, मसीह की निर्दोषता को ओढ़े हुए खड़े हैं । जैसे यीशु परमेश्वर के सामने ग्रहणयोग्य हैं, वैसे ही उनके लोग ।

३:२८ ***''तुम सभी समान हो''***-१ कुरि १२:१३; यूहन्ना १७:२०-२३; कुलु ३:११ । परमेश्वर के सामने यीशु के लोगों के बारे में कोई पक्षपात नहीं है । यीशु के लिए लोगों की पृष्ठभूमि, मूल, सामाजिक स्थिति और जाति आदि का कोई महत्व नहीं है । जिन लोगों को छोटा और गरीब समझा जाता है, वे मसीह में दूसरों की तरह स्वीकार किए गए हैं ।

३:२९ पद ७,१४,१८ ।

४:१-७ उन दिनों की कुछ रस्मों को पौलुस याद करता है और आत्मिक सच्चाई सिखाने के लिए उनका इस्तेमाल करता है ।
लड़के विरासत के हकदार थे और जो कुछ पिता का था उन्हीं का था । लेकिन यदि पिता खर्चा उठा सकते थे, तो बच्चों की देखरेख के लिए जब तक वे बड़े न होते थे, किसी व्यक्ति को ज़िम्मेदारी देते थे । जब वे एक निश्चित आयु तक पहुँचते थे, तब उन्हें ***''बच्चा''*** नहीं बड़ा समझा जाता था ।
पौलुस कह रहा है कि जो लोग नियमशास्त्र के आधीन थे, वे बचपन (जो नासमझी का समय है) में थे, जिससे स्वर्गिक पिता बिल्कुल खुश नहीं थे । विश्वासियों को बेटों का हक मिले । यीशु मसीह के आने से पहले वे ***''दुनिया के प्राथमिक सिद्धांत''*** (पद ३) या व्यवस्था (नियमशास्त्र) के आधीन थे (पद ५) । अब वे ऐसे ***''अभिभावकों''*** या देखरेख करनेवालों से मुक्त हो चुके हैं । स्वर्गिक पिता की सन्तान होने की उन्हें पूरी आज़ादी और आशीषें मिल चुकी हैं ।

४:४ ***''समय''***-यहाँ परमेश्वर के बेटे यीशु के आने के समय तरफ इशारा है । वह ***''एक स्त्री से''*** पैदा हुए थे (मत्ती १:१८-२१, लूका १:२६-३८) । उनके पास सचमुच का मनुष्य स्वभाव था (यूहन्ना १:१४; इब्रा २:१४)। मूसा के नियमशास्त्र के आधीन वह एक यहूदी के रूप में पैदा हुए थे । (जैसा कि सब यहूदी)

४:५ ***''गोद''*** - ३:१३,१४ जब तक लोग यहूदी धर्म के आधीन थे उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार नहीं मिल सकता था ।

४:६ ३:२,१४; रोमि ८:१५ देखें ''अब्बा'' अरामी भाषा में, पिता के लिए शब्द है ।

४:७ मसीही विश्वासी गुलाम की तरह नहीं हैं, जिन्हें दबाव में काम करना पड़ता है । वे स्वर्गिक पिता की सन्तान है, जिन्हें सब कुछ मुफ्त में दिया गया है । (१ कुरि ३:२१-२३) ।

४:८,९ गैर यहूदी विश्वासी पहले झूठे ईश्वरों और मत के बन्धन में थे । अब उन्हें सच्चा ज्ञान मिल गया था । अब वे अपने आप को मूसा के नियमशास्त्र के अधीन लाना चाह रहे थे । यह गुलामी से आज़ादी में आने के बाद फिर से आज़ादी की जगह गुलामी को अपनाना था ।

४:१० पौलुस मूसा की व्यवस्था की बात कर रहा है । ***''दिनों''*** का मतलब है ***''सब्त''***, ***''महीनों''*** -यहूदी पर्व ***''वर्षों''*** -सब्त और जुबली (निर्गमन २०:८, २३:१०,११,१४-१७); लैव्य अध्याय २३:२५:८-१२) । इन सब को बड़े अच्छे से पूरा करने का मतलब है ***''कमज़ोर और तुच्छ''*** सिद्धान्तों को अपनाना (पद९) । वे दिन आत्मिक बातों की मात्र एक तस्वीर नमूना और आत्मिक सच्चाई की छाया हैं । हमें भी जानना चाहिए कि दिनों को मानने या न मानने से न हम भले बनते हैं न बुरे । विश्वासियों को ऐसा करना ही, उन्हें गुलाम बनाता है और आत्मा के जीवन को खराब भी ।

४:११ ***''मुझे यह डर है''*** -यहूदियों का पवित्र दिनों को माना जाना, पौलुस के लिए एक अचरज की बात थी । इससे वह जान गया कि

११ अलग-अलग समयों को मानने वाले बन गए हो । **मुझे** यह डर है, कि शायद मैंने तुम्हारे लिए बेकार में
१२ परिश्रम किया । **भाइयो-बहनो**, मैं तुमसे बिनती करता हूँ कि, जैसा मैं तुम्हारे समान बना, तुम भी मेरे
१३ समान बन जाओ । **तुम** यह जानते हो, कि शारीरिक कमज़ोरी की वजह से मैंने पहले तुम्हें शुभसंदेश दिया था ।
१४ **मेरी** देह में मुझे जिस निर्बलता को सहना पड़ा उसे न ही तुमने तुच्छ जाना न खिल्ली उड़ाई, परन्तु मुझे सृजनहार के
१५ स्वर्गदूत के रूप में स्वीकार किया, यहाँ तक कि मुझे मसीह यीशु समझा । **जिस** आशीष के विषय तुमने कहा, वह सब
कहाँ है ? इसलिए कि मैंने तुम्हारे बारे में गवाही दी थी, कि यदि सम्भव होता, तो तुमने अपनी आंखें को निकालकर दे
१६,१७ दिया होता । **क्या** अब मैं तुम्हारा दुश्मन हो गया हूँ, क्योंकि मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ । **वे** तुम्हें आकर्षित करके तुम्हें अपना
मित्र बनाना चाहते हैं, लेकिन किसी अच्छे उद्देश्य से नहीं, हाँ वे तुम्हें हमसे अलग करना मांगते हैं, ताकि तुम बड़ी उमंग
१८ से उनकी मानने लगो । यह भला है कि किसी अच्छी बात में जोश सदा बना रहे, न केवल तब जब मैं तुम्हारे साथ हूँ ?
१९,२० **मेरे** छोटे बच्चो, जब तक कि मसीह तुममे न बन जाए, तब तक मैं जच्चा की सी पीड़ा सहता हूँ, **मेरी** इच्छा है कि
२१ तुम्हारे साथ रहूँ और मेरी बोली को बदलूं क्योंकि मैं तुम्हारे विषय उलझन में हूँ । **मुझे** बताओ, तुम जो नियमशास्त्र का
२२ पालन करना चाहते हो क्या नियम शास्त्र को कोई नहीं समझते ? **क्योंकि** यह लिखा है कि अब्राहम के दो बेटे थे,
२३ एक उसकी दासी से और दूसरा उसकी पत्नी से । **शरीर** की इच्छा से जो बेटा दासी से उत्पन्न हुआ, वह अब्राहम का

यह इस बात का संकेत है कि वे लोग झूठे शिक्षकों के बिगड़े शुभसंदेश की तरफ मुड़ रहे थे (१:६,७) । वह यह सोच रहा होगा कि उन्होंने सचमुच में शुभसंदेश को जाना या नहीं ।

४:१२-२० पौलुस बहुत ज़रूरी सिद्धान्तों के बारे में कह रहा था । अब वह गलातियों के लोगों और स्वयं अपने बीच के सम्बन्ध के विषय कहता है । यहाँ उसका चरवाहे का दिल दिखता है । वे लोग उसके "छोटे बच्चे" हैं । वह उनसे प्यार करता है और उन्हें चाहता है ।

४:१२ ***"मेरे समान"*** -पौलुस नियमशास्त्र के हर एक दबाव से छूट चुका था, और सिर्फ स्वर्गिक पिता की असीम दया में खुश था । वह चाहता था कि वे इन बातों में उसकी सुनें ।

"तुम्हारे समान बना"-वे गैरयहूदी थे, इसलिए जब वह शुभसंदेश देने गया, वहाँ उनकी तरह हो गया । तुलना करें १ कुरि ९:२०-२३। वह कहता है कि वह उनसे इस तरह से बात नहीं करता, जैसा वह है, क्योंकि उन्होंने व्यक्तिगत तरीके से उसके साथ बुरा बर्ताव किया था । इसके उल्टा, उन अगले पदों में वह दिखाता है, कि आपस में उनका काफी प्यार था ।

४:१३ ***"शारीरिक कमजोरी"***-हमें मालूम नहीं कि यहाँ किस तरफ इशारा है । क्या यह आँख रोग था (१५)? क्या यह २ कुरिन्थियों वाला ***"काँटा"*** या ? क्या यह बुरे बर्ताव का एक नतीजा था (प्रेरित १४:१९)? कुछ भी साफ नहीं मालूम ।

४:१४ ***"निर्बलता"***- वे यह सोच सकते थे कि उसकी यह कमज़ोरी परमेश्वर की तरफ से एक दण्ड था इसलिए वे उसे परमेश्वर का संदेशवाहक नहीं मानना चाहते थे । लेकिन ऐसी परीक्षा में वे गिरे नहीं, लेकिन बड़ी इज्ज़त से स्वागत किया ।

४:१५ झूठे शिक्षकों की शिक्षा जो उन्हें मूसा के नियमशास्त्र की गुलामी में ला रही थी, पौलुस की खुशी और प्यार को बर्बाद कर रही थी । अपनी कोशिश से मुक्ति हासिल करने का तरीका आनन्द को हमेशा से नाश करनेवाला है ।

४:१६ अच्छा संदेश लोगों को देना, सबसे बड़ा काम है । फिर भी अक्सर इसी के लिए लोग हम से नफरत करते और हमें नाचीज़ समझते हैं ।

४:१७,१८ ***"वे"*** यह उन झूठे शिक्षकों की तरफ इशारा है जो घटिया संदेश दे रहे थे (१:६,७) । ऐसे लोग हमेशा गुटों के अगुवे बनना चाहते हैं और लोगों को अपनी तरफ करना माँगते है । रोमि. १६:१७,१८ से मिलान करें । पौलुस (वह हमारे लिए नमूना है) चाहता था कि लोग परमेश्वर के लिए बोझ रखें । तुलना करें १ कुरि. ३:४-९,२१ ।

४:१९ गलातिया के मसीही लोग पौलुस के बच्चे थे (तुलना करें १ कुरि. ४:१५) । उन्होंने नया जन्म पाया था (यूहन्ना ३:४-८)। यह उसके उस प्रयास से हुआ था जिसकी तुलना जच्चा की पीड़ा की तरह थी । फिर से वह पीड़ा में है । अब ज़रूरत यह थी कि उनमें यीशु मसीह बनाए जाएँ । यानि कि जिस तरह यीशु पौलुस में थे, उसी तरह उन में भी दिखायी दें । ३:२,२६-२९ और २:२० देखे । इस बात की ज़रूरत थी कि वे अपने सोच विचार और कामों में बदल जाएँ । (रोमि १२:२,१३:१४; २कुरि ३:१८; इफि ४:१३-१५)

४:२० ***"उलझन"*** - पद १:६;३:११ चिट्ठी से वह कैसे उनसे बातचीत करें, वह यही नहीं समझ पा रहा था ।

४:२१ ***"नियमशास्त्र का पालन"***-उनमें से कुछ लोगों की यह गलती थी । पौलुस को यह मालूम था, कि नियमशास्त्र का अधूरा ज्ञान होने से ऐसा था ।

४:२२,२३ उत्पत्ति १६:१-४; १७:१५,१६; २१:१-५, रोमि ४:१८-२१ ।

४:२४-३१ बाइबल हमें अब्राहम उसकी पत्नी साराह और दासी हागार से कुछ आत्मिक बातें सिखाना चाहती है । हम कह सकते हैं कि बाइबल के पहले भाग की बहुत सी बातें मसीह द्वारा शुरू की गयी वाचा का नमूना और तस्वीर हैं । साथ ही हम सावधान रहें जब घटनाओं और दूसरी बातों का अर्थ लगाएँ । परमेश्वर ने अपनी आत्मा से खास प्रेरणा दी और बिना गलती का शिक्षक बनाया । हमारे साथ ऐसा नहीं है । हमारे समय में आज बाईबल के बड़े अजीब और आत्मिक अर्थ लगाए जाते हैं ।

४:२४,२५ हागार सीनै पर्वत पर बाँधी गयी पुरानी वाचा को दिखाती है (निर्गमन १९) साराह मत्ती २६:२८ की नयी वाचा (नया प्रबन्ध) जो

२४ स्वयं का फैसला था, लेकिन जो उसकी पत्नी से उत्पन्न हुआ, वह परमेश्वर से मिले हुए वायदे की वजह से था। **ये** बातें एक
२५ प्रतीक हैं, इसलिए कि ये दो वाचाएँ हैं। एक सीनै पर्वत से है जो गुलामी उत्पन्न करती है, यह हाज़िरा है। **इसलिए** कि
यह हाज़िरा अरब में सीनै पहाड़ है और वर्तमान के यरूशलेम को दिखाती है, जो अपने बच्चों के साथ गुलामी में है।
२६,२७ **किन्तु** यरूशलेम जो ऊपर है, आज़ाद है और हम सबकी माँ है। **क्योंकि** लिखा है, हे बाँझ, तुम जो बच्चे नहीं पैदा करती
२८ है, तुम जिसे प्रसव की पीड़ा नहीं है चिल्ला, क्योंकि छोड़ी हुयी की सन्तान सुहागिन की सन्तान से अधिक है। **अब**
२९ भाइयो-बहनो हम प्रतिज्ञा की सन्तान हैं। **जिस** तरह से जो देह की इच्छा से उत्पन्न हुआ था, आत्मा से जन्मे हुए को
३० सताता था, वैसा आज भी है। **बाईबल** क्या कहती है ? वह यह कि गुलाम औरत और उसके बेटे को निकाल दो, क्योंकि
३१ गुलाम औरत का बेटा आज़ाद औरत के बेटे के साथ मीरास का हकदार नहीं होगा। **इसलिए** भाइयो-बहनो, हम गुलाम
५ स्त्री के बच्चे नहीं है, लेकिन आज़ाद स्त्री के। **जिस** आज़ादी के लिए मसीह ने हमें आज़ाद किया है, उसमें मजबूती
२ से स्थिर रहो। गुलामी के बन्धन में बन्धे रहना स्वीकार न करो। **मैं** पौलुस तुमसे कहता हूँ, कि यदि तुम खतना कराओगे,
३ तो मसीह से कोई फायदा नहीं होगा। **मैं** गंभीरता से हर व्यक्ति के सामने ऐलान करता हूँ कि जो खतना करवाता

यीशु ने बाँधी को दिखाती है। हागार एक दासी लड़की थी। उसकी सन्तान अब्राहम के मुक्त रूप से उत्पन्न बेटे (रोमि ९:७,८ देखें) हागार, मूसा द्वारा दिए गए नियमशास्त्र को दिखाती है जो सीनै पहाड़ पर दिया गया था वह पृथ्वी के यरूशलेम को भी दिखाती है जो पुरानी वाचा के अभ्यास का केन्द्र था। पौलुस के मुताबिक नियमशास्त्र का मतलब है आत्मिक बंधन या गुलामी (पद १,९; ३:१०,२३)

४:२६ साराह नयी वाचा और स्वर्गिक यरूशलेम की तरफ इशारा है जो नयी वाचा (इब्रा १२:२२) की आत्मिक सच्चाईयों का केन्द्र है। वह कोई गुलामी और बन्धन नहीं है। अब विश्वासी नए यरूशलेम से जुड़े हुए हैं पुराने यरूशलेम से नहीं।

४:२७ यशा ५४:१ देखें। यशायाह ने इस्राएल के उस महान भविष्य के बारे में बाताया है जो मसीह की भलाईयों और उस नए युग का होगा, जिसे वह स्थापित करेंगे। पहले यह बिना फल का था, किन्तु यहोवा की कृपा और शक्ति से फलदायी हो जाएगा।

४:२८ अब्राहम ने परमेश्वर के वायदे पर भरोसा किया, और उसे इसहाक मिला। अद्‌भुत काम करनेवाले, जीवन देनेवाले परमेश्वरीय वचन से इसहाक संसार में आया। इसी तरह से विश्वासी नया जीवन पाते हैं और अब्राहम के आत्मिक वंश बन जाते हैं (याकूब १:१८; १ पत १:२३)। यहाँ ***"वायदा" "प्रतिज्ञा"*** मूसा के नियमशास्त्र के बिल्कुल उल्टा था।

४:२९ उत्पत्ति २१:८,९ देखें। प्रायः जैसे लोग जन्म लेते हैं वैसे इश्माएल उत्पन्न हुआ। उसका जन्म अलौकिक नहीं था। जब इसहाक का पैदा होना असंभव था, परमेश्वर के आत्मा ने ऐसा किया (इब्रा ११:११,१२; रोम ४:१८-२१)। जैसे इश्माएल ने इसहाक को सताया, वैसे ही पुरानी वाचा वाले (यहूदियों) ने नयी वाचा के लोगों (मसीह के लोगों को सताया)। देखें प्रेरित ५:४०; ७:५४-५८; १३:४६,५०; १४:१९; हर युग में लोग नए जन्में लोगों को सताएंगे।

४:३० ***"बाइबल"*** -उत्पत्ति २१:१० आत्मिक मतलब यह है कि जो लोग अपनी कोशिश और नियमशास्त्र से मुक्ति पाना चाहते हैं वे आज़ाद नहीं हैं। परमेश्वरीय कृपा से मुक्ति और आज़ादी पानेवालों के साथ उन्हें कोई जगह भी नहीं है। ये दो फर्क रास्ते कभी एक दूसरे के मिलते नहीं है। पुरानी वाचा (प्रबन्ध) और नयी वाचा (प्रबन्ध) मिलकर कुछ तीसरा नहीं बना सकते है। ऐसी कोई भी कोशिश एक बिगड़ा शुभसंदेश बनाते हैं (१:७)।

४:३१ इसका मतलब यह हैं कि मसीह में विश्वासियों का मूसा के नियमों, पुराने प्रबन्ध (वाचा) या यहूदी मत से कोई सम्बन्ध नहीं है। वे नयी वाचा की सन्तान हैं। मसीह के शुभसंदेश के वायदों के ज़रिये परमेश्वर की शक्ति से वे नया जन्म पा चुके हैं। पुरानी और नयी वाचाओं की तुलना के लिए देखें -२ कुरि ३:६-१८; इब्रा ८:६,१०:१८; १२:१८-२४।

५:१ कोई भी ऐसी शिक्षा जो रीति विधियों नियमों के कोशिश से मुक्ति की प्रतिज्ञा करती है एक गुलामी का फन्दा (४:३-९) है। यहाँ खास मूसा के नियमशास्त्र उसके दिमाग में था, प्रेरित १५:१०,११ से मिलाएँ। यीशु ने किसी ऐसे बोझ से हमको मुक्त किया है। इसका मतलब यह हुआ कि हमको सब तरह के धार्मिक बन्धन से मुक्त किया गया है चाहे वह यहूदी मत का हो, किसी और धर्म या बिगड़ी मसीहत का हो। आज़ाद का मतलब है बिल्कुल आज़ाद। मसीह के अपनाने वालों को चाहिए कि इस आज़ादी की कीमत जाने और हाथ से न जाने दें। वे मसीह के साथ जोड़े गए हैं (मत्ती ११:२८ -३०)। यही जुए (बन्धन) की ज़रूरत उन्हें है। यही बन्धन सच्ची आज़ादी लाता है।

५:२-१२ यहाँ पौलुस साफ भाषा में कहता है कि नियमशास्त्र और शर्तहीन कृपा को मिलाना असंभव है। किसी एक को ही चुनना है। वे दोनों को मान नहीं सकते। ऐसा हो नहीं सकता कि कोई अपनी कोशिश- विश्वास और रीतिविधि या बलिदानों से मुक्ति पाए।

५:२ ***"मैं पौलुस"*** पूरे अधिकार के साथ वह बोलता है (१:१) जिसे मसीह से ज्ञान मिला था (१:१२)।

"खतना" उत्पत्ति १७:११-१४; प्रका १२:३। शारीरिक खतना अपने आप में कुछ नहीं है। पौलुस उस स्थिति की बात कर रहा है, जिसमें वे थे। यदि गलातियावासी उन झूठे शिक्षकों की बात मान लेते और खतने की विधि अपना लेते तो मूसा के नियम को मानने से वे नए प्रबन्ध का लाभ हासिल नहीं कर सकते थे। उन्हें मुक्ति देनेवाले यीशु या मुक्ति न देनेवाले मूसा के नियम को कबूल करना था।

५:३ मतलब यह हुआ कि ऐसे में खतना उन्हें यहूदी मत वाले बनाएगा, जिन्हें मूसा के नियम शास्त्र को मानना ही पड़ेगा। जैसा उसने दिखाया। इससे आशीष (लाभ) नहीं शाप (हानि) ही होगी (३:१०-१२)

४ है उसे सभी धार्मिक नियमों को मानना पड़ेगा । **तुम** जो नियम शास्त्र के द्वारा धर्मी ठहराया जाना चाहते हो, मसीह
५ तुमसे एक दूरी पर रखे गऐ हैं । तुम अति महान कृपा से गिर चुके हो । **आत्मा** के द्वारा हम उस धार्मिकता की आशा
६ के लिए इन्तज़ार करते हैं, जो विश्वास से है । **यीशु** मसीह में न खतना न खतनाहीन कुछ हासिल कर सकता है, लेकिन
७,८ प्रेम द्वारा विश्वास । **तुम** अच्छी दौड़ दौड़ रहे थे । तुम्हें किसने लड़खड़ा दिया ताकि तुम सत्य को न मानो ? **यह** शिक्षा
९ तुम्हें उनसे नहीं मिलती है, जिन्होंने तुम्हें बुलाया है । **थोड़ा** सा खमीर पूरे आटे को खमीरा कर देता है । यीशु में मुझे
तुम्हारे ऊपर भरोसा है, कि तुम्हारा कुछ और इरादा नहीं है । जो तुम्हें सता रहा है, चाहे वह कोई भी क्यों न हो, अपना
१० बदला पाएगा । **मुझे** यीशु में तुम पर भरोसा है, कि तुम किसी और शिक्षा को नहीं अपनाओगे । जो तुम्हें परेशान कर
११ रहा है, चाहे वह कोई भी क्यों न हो, दण्ड पाएगा। **भाइयो-बहनो,** जहाँ तक मेरा सवाल है यदि मैं अभी भी खतने का

५:४ ***"मसीह तुमसे एक दूरी पर रखे गए हैं"*** इसका मतलब है कि ऐसे लोग अपने आपको उनके जीवन में मसीह को काम करने से अलग रखते है । असीम कृपा के दायरे में यीशु क्रियाशील हैं । लेकिन वे लोग उस बड़ी कृपा की तरफ अपनी पीठ कर रहे हैं ।

"कृपा से गिर चुके" - पौलुस यह नहीं कहता है कि विश्वासी ऐसा करेंगे ही । उसे यह निश्चय था कि गलातिया के विश्वासी हालाँकि कमज़ोर थे, ऐसा कभी नहीं करेंगे (पद १०) । वह इस सिद्धांत पर ज़ोर डाल रहा है: नियमशास्त्र और शर्तहीन कृपा को मिलाया नहीं जा सकता । कर्म और विश्वास सिद्धांतों में कोई सामान्य बात नहीं है । नियमों, रीति विधियों पर आसरा करना कृपा मार्ग के खिलाफ जाना है । पौलुस यहाँ यह नहीं कह रहा है कि बुराई में फँसने से मुक्ति को खोया जा सकता है (तुलना करें रोमि ५:९,१०; ८:२९-३९,१ यूहन्ना १:९; २:१) ।

"कृपा से गिर चुके"- इस से उसका अर्थ उन परीक्षओं से नहीं है जो हम सबके सामने आती हैं । उसका इशारा उस कृपा की तरफ है जिससे हमें मुक्ति मिलती है । यह मुमकिन है कि जो वचन में पक्के नहीं हैं वे कुछ समय के लिए झूठे शिक्षकों से भरमाए जाएं । यह संभव नहीं कि वे हमेशा के लिए मुक्ति के कृपा मार्ग को त्याग दें । यदि ऐसा होता है, तो साफ ज़ाहिर है कि वे मसीह के थे ही नहीं (१ यूहन्ना २:१९) । मसीह अपनी भेड़ को संभालेंगे ओर वे स्थायी रूप से नाश नहीं होगी । (यूहन्ना १०:२७,२८,१७:११,१२) ।

५:५ ***"हम"*** - मसीह में सच्चे विश्वासी, जो अपनी कोशिश से मुक्ति के उपाय को नहीं मानते, किसी भी तरह के धार्मिक नियम गुलामी और मौत को लाते हैं । परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं (३:१८,१९) के पूरा होने की आशा, विश्वास उत्पन्न करता है (३:१८,२९) । रोमि ८:२३:२५ से मिलान करें ।

"धार्मिकता"-वह 'धार्मिकता' (निर्दोषता) नहीं जो विश्वासी को मिली है (२:१६; रोमि ३:२१-२४; ५:१) । यह पूरी तरह से पूर्ण निर्दोषता (सिद्धांत) है यह भविष्य में ही है ।

५:६ ६:१५; १ कुरि ७:१९; रोमि २:२८,२९; ४:९-१२ देखें । यही बात किसी भी बाहरी रीति-विधि के बारे में सच है । कोई भी बात हमें स्वर्गिक पिता के सामने ग्रहणयोग्य बना नहीं सकती । पिता उन्हें विश्वास से बचाते हैं । उसके बाद उन्हें मसीह की आज्ञा (सबसे प्रेम करने की) यूहन्ना १३:३४; १५:२ को मानना चाहिए । यदि हम मसीह पर भरोसा नहीं रखते, उनसे प्रेम नहीं करते, तो नियमों रीति विधियों को पूरा करने से क्या फ़ायदा ? विश्वास जिससे प्यार उत्पन्न होता है एक महत्वपूर्ण चीज़ ही नहीं लेकिन बहुत ज़रूरी है ।

५:७ ***"अच्छी दौड़"*** - १ कुरि ९:२४,इब्रा १२:१ ।

"तुम्हें किसने लड़खड़ा दिया"- १:७

५:८ जिन्होंने उन लोगों को बुलाया, वह यहोवा परमेश्वर हैं (१:६) । सच्चाई को मानने से जिसने उन लोगों को अलग रखा था, वह परमेश्वर नहीं थे ।

५:९ १ कुरि ५:६-८ देखें । छोटी सी झूठी शिक्षा पूरी मण्डली या डिनॉमिनेशन को खराब कर सकती है ।

५:१० उनके दूर होने की चेतावनी देने के बाद (पद ४), वह अपना भरोसा उन पर दिखाता है कि उनके साथ ऐसा नहीं होगा स्वयं प्रभु ने उसे निश्चय दिया था, कि जिस सत्य के बारे में उसने उन्हें लिखा है, उससे वे सहमत होंगे । इब्रा ६:९ की तुलना ६:४-८ से और इब्रा १०:३९ की १०:२६-३१ से करें । जहाँ तक झूठे शिक्षक (शिक्षकों) की बात है, जो गुमराह करता है/करते हैं परमेश्वरीय दण्ड का भागीदार/ के भागीदार है/हैं । मिलाएँ २ पत २:१-३ ।

५:११ अगर वहाँ किसी ने कहा होता, कि पौलुस सिखाता है - मुक्ति के लिए खतना ज़रूरी है, तो यह झूठी बात होती ।

"सताव" -यहूदी लोग पौलुस को इसलिए सता रहे थे क्योंकि वह सिखाता था- कि मुक्ति के लिए मूसा का नियमशास्त्र ज़रूरी नहीं और मसीहियों के लिए खतने का कोई आत्मिक महत्व नहीं है ।

"क्रूस की ठोकर"- १ कुरि १:२३ से तुलना करें । यह नाराज़गी क्या होती है ? वापस मूसा के नियमशास्त्र की तरफ जाने से यह नाराजगी खत्म कैसे हो जाती है ? तकलीफ लोगों को यह होती है कि मसीह का क्रूस मनुष्य की पाप में पूरी बर्बादी का एलान करती है । यह दिखाती है कि लोग इतने बुरे हैं, कमज़ोर हैं, कि अपने काम, कोशिश, धर्म, नियम और प्रार्थनाओं से मुक्ति नहीं पा सकते । वह यह भी एलान करती है कि उनकी मात्र आशा उनकी जगह परमेश्वर के बेटे की मौत है ।

क्रूस से लोगों के घमण्ड पर चाँटा पड़ता है और वे यीशु के चरणों की धूल तक आ जाते हैं, इसलिए उन्हें नाराज़गी होती है । क्रूस से लोगों को तकलीफ नहीं होगी, अगर उनसे कहा जाए कि मुक्ति के लिए धार्मिक नियमों और प्रथाओं को मानना

१२ संदेश देता हूँ, तो मैं सताव क्यों सह रहा हूँ? यदि ऐसा है तो क्रूस से ठोकर लगने की बात ही नहीं रही। **जो** तुम्हें
१३ परेशान करते हैं, काश वे अपने आप को ही काट डालते। **भाइयो-बहनो** तुम्हें आज़ादी के लिए बुलाया गया है किन्तु
इस आज़ादी को अपनी शारीरिक इच्छा पूरी करने के लिए इस्तेमाल मत करो। इसके बजाए प्रेम से एक दूसरे की सेवा
१४,१५ करो। **पूरे** नियमशास्त्र का एक निचोड़ यह है: "तुम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो" **किन्तु** यदि तुम एक दूसरे
१६ को फाड़ खाते हो, तो सतर्क रहो, कि एक दूसरे को खतम न कर डालो। **इसलिए** मैं कहता हूँ आत्मा के द्वारा जीवन
१७ जियो तब तुम अपनी इच्छाओं के अनुसार नहीं जिओगे। **क्योंकि** कि पुराना स्वभव पवित्र आत्मा के विरोध में इच्छा रखता
है और पवित्र आत्मा पुराने स्वभाव के विरोध में, ये एक दूसरे के विरोधी हैं, ताकि तुम वह सब न कर सको, जो तुम
१८ चाहते हो। **किन्तु** यदि तुम पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन से जीवन बिताते हो, तो तुम नियमशास्त्र की आधीनता में नहीं
१९,२० हो। **पुराने** स्वभाव के कार्य ये सब हैं, व्यभिचार, लुचपन, अशुद्धता, दुष्टता, **व्यभिचार**, जादू-टोना, नफरत, ईर्ष्या, क्रोध,
२१ हत्या, नशा आदि। **मैं** इनके सम्बन्ध में पहले ही से कह देता हूँ, जैसा पहले भी कह चुका हूँ, वह यह कि वे जो

काफी है। यही बहुत से धार्मिक लोग सुनना माँगते है। वे सोचते हैं कि अच्छे-अच्छे काम करके वे स्वर्गिक पिता को खुश कर सकेंगे। उनके घमण्डी अन्धे मनों को यह शिक्षा अच्छी लगती है।

५:१२ ***"जो तुम्हें परमेशान करते हैं"*** - शिक्षक गलातिया के लोगों को परमेश्वर के सत्य का विरोध करने के लिए उकसा रहे थे। पौलुस का कहना है, ऐसे शिक्षक मूर्ति के मन्दिर के सिरफिरे पण्डितों से अच्छे नहीं हैं, जो अपने शरीर में काटा-पीटी करते हैं।

५:१३ इस मसले पर अब पौलुस व्यवहारिकता की बात करता है। यही उसका हमेशा का तरीका है - वह पहले किसी सत्य की नींव रखता है, और फिर मसीह के लोगों से बिनती करता है, कि इसके हिसाब से जीएँ। तुलना करें रोमि १२:१,२; इफि ४:१।

"आज़ादी"- मसीह हमको इसलिए आज़ाद नहीं करते,कि हम बुराई में लगे रहें (दुष्टता करना आज़ादी नहीं है लेकिन सबसे खतरनाक गुलामी -यूहन्ना ८:३४; रोमि ६:१६। यीशु हमें आज़ाद इसलिए करते है ताकि हम यहोवा परमेश्वर और एक दूसरे के अपने मन से नौकर बन जाएँ) देखे रोमि ६:१५-२३।

"शारीरिक इच्छा पूरी करने" - यूनानी में "सार्क्स" की बात पौलुस करता है, स्वभाव से हम वहीं हैं। देखें रोमि ७:५,१८; ८:३,५। यीशु पर विश्वास करनेवाले, नियमशास्त्र से इसलिए आज़ाद नहीं है, ताकि अपने दुष्ट कामों में लगे रहें - लेकिन ठीक इसका उल्टा है। देखें (रोमि ६)।

५:१४ क्यों वे नियमशास्त्र को मानना चाहते थे (४:२१)? पौलुस कहता है कि नियमों को भूल जाओ, रिवाजों को भूल जाओ और नियमशास्त्र का जो निचोड़ है यानि कि प्यार उसे अपनाओ (लैव्य १९:१८; मत्ती २२:३९; रोमि १३:८-१०; याकूब २:८)। सच देखा जाए तो नियमशास्त्र का निचोड़ उन्हीं में पूरा हो सकता है, जो मसीह पर भरोसा रखते हैं और उनके पास पवित्र आत्मा है (रोमि ८:४)।

५:१५ यहाँ झूठे शिक्षक झगड़े और तोड़ने-फोड़ने का काम कर रहे थे। यह उनके कामों का एक परिणाम था (रोमि १६:१७)।परमेश्वर यह चाहते हैं कि उनके लोग प्यार और सच्चाई में जुड़े हों-ऐसे प्यार में नहीं जहाँ सत्य न हो न ही ऐसे सत्य में जहाँ प्यार न हो। गलती और झगड़ा कलीसियाओं को बर्बाद कर देते हैं। सत्य और प्रेम उन्हें आत्मिक तरीके से ज़िन्दा और बढ़ता हुआ रखते हैं।

५:१६ ***"जीवन जीना"*** या ***"बर्ताव"*** या ***"आगे बढ़ना"*** यहाँ से ६:१० तक यह पौलुस का विषय है। आत्मा से उसका इशारा पवित्र आत्मा की तरफ है। वही है जो मसीहियों को मसीह की तरह जीवन जीने के लिए ताकत देता है। रोमि ८:४-१४ से तुलना करें। पौलुस इन्कार नहीं करता कि बुरे स्वभाव की इच्छाएँ हम में नहीं हैं। रोमि ७:१४-२५; १३:१४; १ यूहन्ना १:८ भी देखें। इन बुरी इच्छाओं को काबू में किया जा सकता है।

५:१७ परमेश्वर की आत्मा और इन बुरी इच्छाओं (मनुष्य का पतित पापी स्वभाव) में कुछ भी एकता नहीं है (रोमि ८:५-८)। हमेशा उनमें युद्ध रहेगा। परमेश्वर का आत्मा लगातार इन बुरी इच्छाओं से युद्ध करेगा और इन माँगो को पूरा नहीं करेगा। पौलुस के इन शब्दों ***"तुम वह सब न कर सको, जो तुम चाहते हो"***- का इसका मतलब यह हुआ कि मसीह के लोग वह सब अच्छा नहीं करते, जिसे करना चाहते हैं, क्योंकि उनकी पुरानी इच्छाएँ रूकावट डालती हैं (रोमि ७:१५,१८,२०) इसका मतलब यह भी हो सकता है कि वे बुरी इच्छाओं को तृप्त इसलिए नहीं करते क्योंकि उनके भीतर पवित्र आत्मा उन इच्छाओं का विरोध करता है। दोनों ही बातें हो सकती हैं। यह देखें कि पौलुस यह नहीं सिखाता, कि पृथ्वी पर इन इच्छाओं को निकाल फेंकना एक तरीका है। ऐसा कहीं नहीं लिखा है। वह कुछ और सिखाता है। जीत हासिल करने का तरीका परमेश्वर के आत्मा से जीना है।

५:१८ ***"पवित्रआत्मा के मार्गदर्शन में चलते हो"***- रोमि ८:१४ देखें। परमेश्वर के आत्मा से बहुत से लोगों को स्वयं की कोशिश से मुक्ति के लिए तरीका बताया है। वापस वह उन्हीं बातों में हमें ढकेलता नहीं है।

"नियमशास्त्र की अधीनता से मुक्त"-रोमि ६:१४ अक्सर लोगों का ख्याल यह है कि इच्छाओं और देह के कामों को दबाने के लिए नियम और रीतियाँ चाहिए। पौलुस को मालूम था कि ऐसी बातें अक्सर गंदी इच्छाओं और बुराई को बढ़ावा देती हैं। देखिये रोमि ५:५; ७-१३। वह जानता था कि परमेश्वर के आत्मा ही से हम देह की इच्छाओं को मार सकते हैं।

५:१९-२१ वह अनैतिकता, स्वार्थ, झगड़े, नशे आदि को मूर्तिपूजा के साथ ही रखता है। आत्मिक लोगों के लिए यह ***"साफ ज़ाहिर"*** है कि

२२ ये सब करते रहते हैं, यहोवा के राज्य में प्रवेश नहीं करेंगे । **किन्तु** पवित्र आत्मा का फल प्रेम, खुशी, शान्ति, धीरज,
२३,२४ सहनशीलता, दयालुता, भलाई, विश्वास, **नम्रता** और संयम है। इन सब के विरोध में कोई नियमशास्त्र नहीं है । **जो** मसीह

ये बातें भीतर से आती हैं । मिलाएँ मत्ती १५:१६; मरकुस ७:२६-२३; रोमि १:२१-३२; ३:६-१-१८। यहाँ कुछ बातें सीधे लोगों के खिलाफ हैं, कुछ परमेश्वर के, कुछ बुरा करनेवालों के । वे सभी नुकसान करनेवाली और परमेश्वर के गुस्से और इन्साफ के लायक हैं ।

"मूर्तिपूजा"-निर्ग २०:३-६ आदि ।

"जादूटोना"- व्यव १८:६-१२ ।

"झगड़े" "गलत शिक्षाएँ"-१:६,७ १ कुरि ३:३,४

"ईर्ष्या"- नीति १४:३०; २७:४; मत्ती २७:१८; प्रेरित १७:५; याकूब ३:१४,१६ ।

५:२१ ***"करते रहते"- अभ्यास करते*** ।

"यहोवा के राज्य में प्रवेश नहीं करेंगे"-देखें ६:७,८; १ कुरि ६:६,१०; इफि ५:५,६ प्रका २१:८ । इसके बावजूद ऐसे लोग सोचते हैं कि वे चाहे कुछ भी करें, बच जाएंगे । ऐसे लोगों से बचें । उन्होंने खुद को तो धोखा दिया है और हमें भी देना माँगते हैं । ***"परमेश्वर के राज्य"*** (मत्ती ४:१७) पर नोट्स देखें ।

५:२३,२३ ये बातें विश्वासी की आत्मा से नहीं निकलती हैं लेकिन विश्वासी के भीतर के पवित्र आत्मा से । ये सब लोगों की कोशिश से नहीं होता है । इसका मतलब यह भी नहीं कि वह हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाए और कुछ न करे । जरूर है कि वह पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन को हासिल करे । नहीं तो जीवन में फल नहीं लगेगा । 'फल' शब्द उन्नति की क्रिया को दिखाता है । मत्ती १३:२३ से मिलाएँ । यदि हम फल चाहते हैं तो बीज से शुरूआत है । इसके बाद पौधा या पेड़ । इसके बाद कली और फूल और आखिर में फल । आत्मिक फल ऐसे ही निकलता है । हम जब यीशु को अपनाते हैं, प्रेम, आनन्द और शान्ति मन में आती है । इन सभी बातों को बढ़ना चाहिए । धीरज ईमानदारी खुद को काबू में रखना यह सब धीरे-धीरे बढ़ते जाते हैं । तुलना करें २ पत १:५-८ ।

इस सूची के सभी गुण हम में हों, यह स्वर्गिक पिता चाहते हैं । पवित्र आत्मा से ऐसा होता भी है । पौलुस प्रेम को सबसे ऊपर रखता है । वह जानता था कि, यह सबसे महान है (पद ६:१४; १ कुरि १३:१३) ।

"आनन्द" -यूहन्ना १५:११; १६:२०-२२; १७:१३; रोमि ५:११; १४:१७; १५:१३ । जिस प्रसन्नता का फायदा लोग उठाते हैं वह अक्सर बाहरी बातों पर निर्भर है । विश्वासियों का आनन्द अनन्तकाल की बातों पर टिका है ।

"शान्ति" - लूका २:१४; यूहन्ना १४:२७; १६:३३; रोमि १:७; १४:१७;१५:१३ ।

"संयम"- यूनानी में यह एक शब्द है, इसके दो मतलब हैं । रोमि ५:३; कुल. १:११; इब्रा ६:१२; १०:३६; १२:१; याकूब १:३,४ ।

"कोमलता"-(यूनानी में यह "सज्जनता" से सही शब्द है) २ कुरि ६:६; इफि २:७; तीतुस ३:४।

"भलाई"-रोमि १५:१४; इफि ५:६ ।

"विश्वास" या ***"विश्वासयोग्यता"*** - मत्ती २४:४५; २५:२१; १ कुरि. ४:२; ७:२५; प्रका २:१०; १७:१४ ।

"नम्रता" - मत्ती ११:२६; २ कुरि १०:१; १ थिस्सु २:७ ।

"संयम"-२ तिमो १:७; १ कुरि ६:२५,२७; २ पत १:६ ।

ये सभी गुण परमेश्वर की आत्मा से दिए जाते हैं ताकि हम उन्हें अपने जीवन में रखें । हम खुद उनके लिए रूकावट भी बन सकते हैं और उन्नति के कारण भी ।

५:२४ यह सभी सच्चे विश्वासियों के साथ होता है । सभी जो मसीह के हैं कुछ ही लोग नहीं ।२:२० में पौलुस मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाए जाने के बारे में कहता है । विश्वासी ने क्या किया है, यहाँ उसके बारे में वह कहता है । वह यह नहीं कहता कि विश्वासी ऐसा करें, लेकिन यह कि उन्होंने ऐसा किया है । जब उन्होंने सबसे पहले मसीह पर भरोसा किया, ऐसा हो गया ।

मन बदलाव का मतलब है उस पुराने जीवन के तरीके से हट जाना जो पुराने बुरे स्वयं के शिकंजे में था। मसीह में विश्वास, अपने लिए उनकी मौत को ग्रहण करता है । दूसरे शब्दों में मन बदलाव की क्रिया और मसीह में विश्वास से हम यह कहते हैं, "मसीह को नहीं, मुझे क्रूस पर चढ़ाया जाना चाहिए था । हालाँकि यह विचार शुरू में किसी के मन में नहीं होता है । वे यह मान रहे हैं, कि उनके बुरे स्वभाव के लिए सही जगह क्रूस ही है । वे परमेश्वर के न्याय की घोषणा से सहमत होते हैं ।

वे अपना इन्कार करके अपना क्रूस उठा कर मसीह की ही मानना चाहते हैं (मत्ती १०:३८,३६) ।१६:२४-२६। नोट्स देखें । यदि लोग ऐसा नहीं करते है तो यह इस बात का सबूत है कि वे सच्चे यीशु के सच्चे अनुयायी नहीं है । पौलुस यहाँ पर सच्चे विश्वासियों की परिभाषा देता है । अगर उन्होंने अपने दुष्ट स्वभाव को बलि नहीं चढ़ाया है तो वे मसीह के नहीं है ।

फिर भी यह अंश पद १६ से हमें यह सोचने पर मजबूर नहीं करता है कि विश्वासियों को पुराने स्वभाव की बची हुयी बातों से तकलीफ नहीं होगी । पौलुस दिखाता है कि उसके उल्टा ही सत्य है । परमेश्वर और दुष्टता के खिलाफ जो रवैया विश्वासियों को होता है वह यह है -कि उन्होने दुष्ट स्वभाव को क्रूस पर वध किया है और मसीह के साथ एक हो गए हैं, जो उनकी जगह पर चढ़ाए गए थे (रोमि ६:४-७)। आज दो विचार हैं- एक के अनुसार पुराना स्वभाव मर गया और गाड़ा गया, दूसरे के अनुसार ऐसा नहीं है । परंतु विश्वासियों में पापी स्वभाव मरा और दफन नहीं हुआ है । वह फिर से उनके जीवन में आना चाहता है (पद १७) इसलिये मसीह कहते हैं हमें "हर रोज" अपना क्रूस उठाना चाहिये - लूका ६:२३ ।

"पुराने स्वभाव को क्रूस पर चढ़ा दिया"- विश्वासियों के उनके अपने पापी स्वभाव और मसीह के क्रूस के विषय बताता है।

२५ के हो चुके हैं, उन्होंने अभिलाषाओं और इच्छाओं सहित पुराने स्वभाव को क्रूस पर चढ़ा दिया है। **यदि** हम पवित्र आत्मा
२६ में जीवित हैं, तो उसी के अनुसार हमारा जीवन जिया जाए। **हम** झूठी प्रशंसा की चाह रखकर एक दूसरे को न चिढ़ाएँ
६ और न ही एक दूसरे से जलें। **भाइयो-बहनो**, कोई भी व्यक्ति पाप में गिर सकता है। तुम आत्मिक लोगों को चाहिए
२ कि तुम भी सतर्क रहो, ताकि पाप में न गिरो। पाप में फँस जानेवाले व्यक्ति को नम्रता से वापस ले आओ। **एक** दूसरे
३ का बोझ उठाकर मसीह का नियम पूरा करो। **यदि** कोई व्यक्ति यह सोचे कि वह कुछ है, जबकि कुछ नहीं है, तो वह
४ स्वयं को धोखा देता है। **प्रत्येक** व्यक्ति अपने काम को परखे और करके दिखाए, तब उसे किसी दूसरे में नहीं लेकिन
५,६ अपने ऊपर घमण्ड करने का अवसर मिलेगा। **क्योंकि** हर एक को अपना बोझ स्वयं ही उठाना पड़ेगा। **जो** दूसरों से
७ वचन की शिक्षा पाता है वह सभी अच्छी वस्तुओं को उनके साथ बाँटे। **धोखे** में मत रहना; परमेश्वर को ठगा नहीं जा
८ सकता। मनुष्य जो कुछ भी बोता है, वही काटेगा भी। **जो** अपने मन के अनुसार जीएगा, वह बर्बादी की फसल काटेगा।
९ जो पवित्रआत्मा के मार्गदर्शन में चलेगा, वह अनन्तकालिक फसल काटेगा। **भलाई** करने में हम थक न जाएँ, क्योंकि यदि
१० हम हिम्मत न हारें, तो निश्चित समय पर फसल देखेंगे। **इसलिए** जब हमें अवसर मिलता है, सब के साथ भला व्यवहार
११ करें, विशेषकर उनके साथ जो विश्वास के घराने के हैं। **मैंने** अपने हाथों से बड़े-बड़े अक्षरों में किस तरह लिखा है, यह

५:२५ परमेश्वर के आत्मा ने सभी को आत्मिक जीवन दिया है (यूहन्ना ३:३-८)। क्योंकि यह सच है जहाँ आत्मा अगुवाई करता है, उन्हें जाना चाहिए। पापमय स्वभाव पर जीत के लिए यही एक तरीका है। इसकी एक ही जगह है - वह है क्रूस।

५:२६ रोज़मर्रा की जिन्दगी में आत्मा की अगुवाई में जीने की बात पौलुस करता है। पवित्र आत्मा झूठ, झगड़ा और ईर्ष्या को पसन्द नहीं करता। ऐसा ही हमें करना चाहिए।

६:१ ***"नम्रता से"*** -५:२३; २ तिमोथी; २:२४,२५ - जो व्यक्ति परीक्षा में गिर गया है, उस पर दोष लगाना, कठोर शब्द कहना उसे वापस लेने का तरीका नहीं है। तुलना करें लूका २२:६०-६२; मरकुस १६:७; यूहन्ना २१:१५।

"पाप में न गिरो"- जो लोग आत्मिक हैं, उन्हें यह नहीं समझाना चाहिए कि वे प्रलोभनों और पाप से अछूते हैं (१कुरि १०:१२)।

६:२ विश्वासी मूसा के नियमशास्त्र के आधीन नहीं हैं (३:२५,५:१) वे मसीह के नियमशास्त्र के नीचे हैं। यह प्यार का नियम है (यूहन्ना १३:३४)। यदि हम अपने संगी विश्वासियों से प्यार करते हैं, तो हमें हर एक बात में उनकी मदद करना चाहेंगे जिससे उनका जीवन परेशानी और तंगी का हो जाता है।

६:३ पद २ को पूरा करने में सबसे बड़ी रूकावट झूठ (५:२६) है। अगर हमें दूसरों की मदद करना है, तो खुद की तरफ सही रवैया रखना चाहिए। यह सही रवैया लूका १७:१० रोमि १२:१६; १ कुरि ३:५-७; फिलि २:३।

६:४ २ कुरि १०:१२-१८ देखें। यदि हम यह सोचते हैं कि हम दूसरे विश्वासियों से बेहतर हैं, या दूसरों की अपेक्षा हमारी सेवकाई अच्छी है, तो हमारे भीतर घमण्ड आएगा और पद २ पूरा नहीं हो पाएगा।

६:५ प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ज़िम्मेदारियाँ है और परमेश्वर के प्रति दूसरों के लिए उत्तरदायी है न कि किसी दूसरे के लिए (यूहन्ना २१:२१,२२; रोमि १४:१२)।

६:६ १ कुरि ६:६-१४; रोमि १५:२६,२७; १ तिमो ५:१७,१८ से तुलना करें।

६:७ यह सच्चाई पूरी बाइबल में है- लैव्य २६:३-१७; व्यवस्था ३०:१५-१८; होशै८:७; १०:१२; नीति २२:८; भजन १८:२५-२७; अय्यूब ४:८; २कुरि ६:६।

६:८ जीवन जीने के दो संभावित तरीके हैं : अपने आप को खुश करना ("शरीर") या परममेश्वर के आत्मा को खुश करना। एक का अन्त सर्वनाश में है, जैसे होना भी चाहिए। दूसरे का अन्त हमेशा के जीवन में है (१५:१६-२१; रोमि २:५-११;८:५,६,१२-१४)। पौलुस ने पहले ही से कह दिया कि विश्वासियों ने देह को क्रूसित किया है (५:२४)। इसलिए जो अपने बुरे स्वभाव को खुश करता है। वह मसीह में सच्चा विश्वासी नहीं है (हालाँकि यह संभव है कि विश्वासी बुराई में गिरे)।

क्या अनन्त जीवन कुछ ऐसा है जो कुछ करने का परिणाम है ? पौलुस जानता था कि यह एक वरदान है (रोमि ६:२३), लेकिन यहाँ दिखाता है कि यह मीरास एक खास जीवन जीने पर ही पाया जाता है (रोमि २:७-१०) से तुलना करें। वह कामों से मुक्ति के सिद्धांत को नहीं सिखा रहा है। वह परमेश्वर के आत्मा से बदले गये जीवन की बात कर रहा है।इस दुनिया में मसीह के विश्वासी लोग दूसरे लोगों की तरह नहीं है। सिर्फ वे ही पवित्र आत्मा के लिए बोते हैं।

६:६ ***"भलाई करने"***-यह एक तरीका है जिससे विश्वासी परमेश्वर के आत्मा को खुश करते हैं। यही एक सबूत भी है कि परमेश्वर का आत्मा उनमें है (५:२२)। जो कुछ भला, विश्वासी करते हैं; उसका प्रतिफल उन्हें मिलेगा। -मत्ती ५:१२;१०:४२;२५:२१; १कुरि.३:१४; १५:५८; प्रका २२:१२। जो लोग इस संसार में अच्छा करना मांगते है, उन्हें बहुत से मौके मिलेंगे।वे हिम्मत खो भी बैठेंगे। पौलुस भविष्य के ईनाम के विचारों से लोगों को हिम्मत दिलाता है।

६:१० ***"सब"*** -का अर्थ सभी - यहाँ तक कि हमारे दुश्मन भी (मत्ती ५:४३-४८; लूका ६:३५; रोमि १२:२०२१)।

६:११ ***"बड़े बड़े अक्षरों"***- क्या पौलुस ने बड़े अक्षरों से इसलिए लिखा क्योंकि उसकी आँखों में कुछ खराबी थी ? या इसलिए क्योंकि उस बात पर ज़ोर डाल रहा था ? हमें नहीं मालूम।

१२,१३ देखो ! **जो** लोग खतना करना चाहते हैं, वे मसीह के क्रूस के कारण आने वाले सताव से बचना चाहते हैं । **जो** लोग खतना
करवाते हैं, वे भी नियम शास्त्र का पालन नहीं करते हैं । वे तुम्हारा खतना इसलिए करवाना चाहते हैं, ताकि तुम्हारे कारण
१४ घमण्ड कर सकें । **लेकिन** परमेश्वर करे, कि मैं यीशु मसीह के क्रूस को छोड़कर किसी और बात का घमण्ड न करूँ,
१५ जिसकी वज़ह से मेरे लिए संसार क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है और मैं संसार के लिए । **इसलिए** कि मसीह में न खतना
१६ और न खतनारहित का कुछ अर्थ है, किन्तु एक नयी सृष्टि । **उन** लोगों को शान्ति और कृपा मिले, जो इस नियम पर चलते
१७ हैं और परमेश्वर के इस्राएल को भी । **अब** से कोई मुझे परेशान न करे, क्योंकि मैं अपनी देह पर यीशु मसीह के दागों
१८ को सहता हूँ । भाइयो-बहनो, प्रभु यीशु मसीह की दया तुम्हारी आत्माओं के साथ हो । ऐसा ही हो ।

६:१२ वहाँ पर झूठे शिक्षक लोगों के खुश करने की कोशिश कर रहे थे । अपनी योग्यता और जोश से यहूदियों से इज़्जत चाह रहे थे । वे ***"क्रूस की नाराज़गी"*** को सहन नहीं करना चाहते थे (५:११) । कुछ नाम के मसीह के सेवक मशहूर होने के लिए और सताव से बचने के लिए कुछ भी कर सकते थे । तुलना करें १:१० ।

६:१३ ***"पालन"***-रोमि २:१७-२,४ । एक भी झूठा शिक्षक पूरी तरह से मूसा के नियमशास्त्र का पालन नहीं करता था ।

"घमण्ड"-यह घमण्ड कि उन्होंने अपने ख्याल वाले मसीही पैदा किए थे ।

६:१४ ***"क्रूस"***-घमण्ड का एक आधार था । यह उसमें और उसके किए गए काम में नहीं, लेकिन अपराधियों के लिए यीशु के मरने में था । तुलना करें रोमि ३:२७; इफि २:६ । हम उनसे सतर्क रहें जो इन बातों में पौलुस को नमूना नहीं बनते, लेकिन अपने ऊपर या अपने कामों पर घमण्ड करते हैं, वे उनके चरित्र को दिखाते हैं ।

"क्रूस पर चढ़ाया जा चुका "-२:२०; ५:२४ यहाँ "दुनिया" से मतलब "ये बुरा युग (संसार)" १:४ । इसका मतलब है दुष्ट संसार - वह सब जिसे लोग चाहते हैं और घमण्ड करते हैं । यूहन्ना १:१०; ७:७; १७:१४; रोमि १२:२; १ यूहन्ना २:१५-१७, ५:१६ से तुलना करें । पौलुस इस गंदे संसार से कुछ नहीं चाहता था । उसके लिए यह मरा हुआ था । वह इसके लिए मर गया था । दुनिया उसे बेवकूफ़ समझती थी । मसीह की मौत की वजह से दुनिया और उस में एक बड़ी खाई थी । दुनिया ने मसीह को मार डाला- मसीह के हत्यारों से पौलुस को क्या लेना देना ?

गलातियों में क्रूसित शब्द विश्वासी के संदर्भ में कैसे इस्तेमाल किया गया, यह देखें "मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ा दिया"(२:२०), शरीर को क्रूस पर चढ़ा दिया (५:२४) संसार के लिए क्रूस पर चढ़ा दिया (६:१४) ।

६:१५ ***"एक नई सृष्टि"*** - २ कुरि ५:१७ । खास बात है भीतरी व्यक्ति का बदलाव नया आत्मिक जीवन न कि रीति विधि और ऐसे धार्मिक नियम जिनको, यहूदी माना करते थे । यदि हमने नया जन्म (मुक्ति के लिए यीशु पर भरोसा नहीं पाया है (यूहन्ना ३:३-८), बाहरी बातों से कोई फायदा नहीं है । अगर हमने नया जन्म पाया है, ज़रूरी है कि हम उन्हें न अपनाएँ ।

६:१६ ***"इस नियम"***-यानि कि १४,१५ पद में दिए गए नियम ।

"और परमेश्वर के इस्त्राएल"- "इस्त्राएल" से पौलुस का मतलब वे यहूदी हैं, जिन्होंने कर्म मार्ग को त्याग दिया है और मसीह पर भरोसा रखा है । वे सच्चे इस्त्राएली हैं । रोमि २:२८,२९; ९:६;११:१-७ । न्यू टैस्टॉमैन्ट में विश्वास में आए हुए यहूदियों और गैरयहूदियों को, परमेश्वर का इस्त्राएल कभी नहीं कहा गया था ।

६:१७ पौलुस मसीही लोगों से बिनती करता है कि वे उसकी शिक्षा को अपनाएँ । गलत शिक्षा को छोड़ें और उसे परेशान न करें ।

"यीशु मसीह के दाग"- शायद वह उन दागों की तरफ इशारा कर रहा है, जो उसकी देह में मसीह सेवा के कारण थे - २ कुरि १:५; ११:२३-२५; कुलु १:२४।

६:१८ जैसे पौलुस ने चिट्ठी को शुरू किया था वैसे ही वह ***"असीम कृपा"*** के साथ अन्त भी करता है । यह उनको याद दिलाया जाना था कि हर एक भलाई जो वे अपने जीवन में देखते हैं खासकर आत्मा से जुड़ी हुयी भलाईयाँ, सभी मसीह की बड़ी कृपा से हैं ।